शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321–9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 20, अंक 04, जनवरी 2021

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

मूल्य 15/रु0

मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की आप सभी को बधाई

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

तृतीय ऑन लाईन गोष्ठी का विषय :

भक्तिकालीन सन्त काव्य की प्रासंगिकता

आयोजन की तिथि : 30 जनवरी 2021, समयः सायं 7 बजे

लघु शोध लेख भेजने की अंतिम तिथि 25.01.2021

इसमें दो भाग है लघु शोध लेखन (शब्द सीमा 3000 से 5000) और वाचन (आडियो) अधिकतम 9 मिनट। कोई भी हिन्दी प्रेमी इसमें प्रतिभाग कर सकता है. सर्वश्रेष्ठ वाचक को सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित जी द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर सम्मानित किया जाएगा एवं सर्वश्रेष्ठ शोध लेख को संस्थान द्वारा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करेगा एवं लेख को शोध पत्रों के प्रकाशन के लिए विधि मान्य संस्थान की मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के आगामी अंक में प्रकाशित भी किया जाएगा।

विशेषः यह गोष्ठी प्रत्येक माह की 30 तारिख को हिन्दी साहित्य के इतिहास पर क्रमानुसार चलती रहती है।

आयोजकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, लखनऊ, ईकाई

अपने शोध एवं आडियो संस्थान के ई-मेल आईडी hindiseva15@gmail.com, पर भेज सकते है एवं वाचन के लिए निम्नलिखित ह्वाटसएप नंबर 9335155949, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव-हिन्दी सांसद, लखनऊ : 9453672244 पर आयोजन के तीन दिन पूर्व सम्पर्क कर सकते है। कृपया फोन पर वार्ता न करें।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:20, अंक: 04
जनवरी : 2020

इस अंक में......

हिंदी के समर्थन में प्रचंड जनसंख्या खड़ी करने के अंतर्राष्ट्रीय लाभ क्या हैं? 5

युगपुरुष गुरु गोबिन्द सिंह.................07

हिन्दी के लिए लड़ने वाला सबसे बड़ा वकील : महात्मा गाँधी 9

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः आंदोलन एवं मीडिया की भूमिका 04

भारतीय भाषाओं में है आत्मनिर्भरता का मूल 13

ये आग कब बुझेगी : ज्वलंत विषयों पर मीडिया की भूमिका.......16

सबसे ज्यादा सुपरहिट फिल्में देने वाले "ऋषि कपूर" 17

धारावाहिक उपन्यासः मुगल–ए–आजम की विरासत....... 18

आदिकालीन साहित्य के अध्ययन की समस्याएं. 20

कविताए/गीत/ग़ज़लः मंजुनाथ जी 31

कहानीः कबीर, काला पानी उजली रेत 22, 27

साहित्य समाचार, ...32

लघु कथाएं: मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, सीताराम गुप्ता, शबनम शर्मा 26

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

असली दोषियों की बल्ले बल्ले

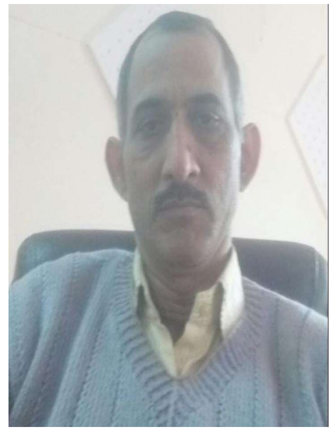

हमारे अपने प्रदेश में आजकल एक कार्य प्रतिदिन दैनिक समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर स्थान बना रहा है वह है इनकाउन्टर व कथित अवैध निर्माण का गिराया जाना. वैसे तो यह कार्य गत कई वर्षो से चल रहा है, लेकिन अब यह गति पकड़ चुका है. अवैध निर्माणों के गिराये जाने के पीछे तर्क यह दिया जाता है कि नक्शा पास नहीं है, अवैध सम्पत्ति है, कब्जे की जमीन है........???? अगर वास्तव में कोई अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति, दबंग जिसने किसी कमजोर व्यक्ति की जमीन हड़पकर निर्माण कराया है, तो निश्चित ही उस मकान या जमीन से कब्जा हटना चाहिए. लेकिन करोड़ों की मकान को बुलडोजर से जमीदोज़ कर देने से किसका भला होता है न उस गरीब का जिसकी जमीन/मकान हड़पी गई थी, न बनाने वाले का न शासन प्रशासन का. उल्टे हमारे टैक्स के लाखों रुपये उस मकान को गिराने की व्यवस्था करने में खर्च हो जाते है, पड़ोसियों के मकान दरक जाते है, टूट जाते है, मलवों का ढेर इकट्ठा हो जाता है वह अलग. लेकिन सबसे अहम सवाल यह कि जब वह मकान बिना नक्शा के बन रहा था तो शासन/प्रशासन कहां सो रहा था, जब वह गरीब अपनी जमीन/मकान का कब्जा होने पर थाने व प्रशासन के पास दौड़ रहा था, रो रहा था, पैर पकड़कर गिरगिड़ा रहा था. अवैध निर्माण को रोकने, बिना नक्शा के मकान बनने से रोकने के लिए अलग-अलग स्तर पर बकायदा अधिकारी और कर्मचारी नियुक्त है. वे किस काम का तनख्वााह लेते है. यही कर्मचारी जब शहर के किसी आम आदमी के खाली प्लाट पर या अर्द्ध निर्मित मकान पर ईटा, बालू गिरते हुए देखते है तो अपनी ड्यूटी निभाने अवश्य जाते है, लेकिन सिर्फ़ नज़राना लेने. न तो उन्हें नक्शे से मतलब होता है और न जमीन से. नज़राना मिल गया ड्यूटी समाप्त. अगर नक्शा पास भी है आम आदमी क्या मजाल जो बिना नजराने दिए निर्माण करवा सके. हां, सत्ताधारी पार्टी या किसी बड़े अधिकारी, दबंग का हो तो बाद दिगर है. सत्ता बदलने, सत्ताधारी पार्टी या उस पार्टी के विरोधी/प्रतिद्वंदी होने पर वहीं कर्मचारी, अधिकारी उसी मकान का नक्शा पास होने, अवैध कब्जा बताकर नोटिस थमाते है, फिर उस मकान को जमीदोंज कर दिया जाता है. इस पूरी प्रक्रिया में सत्ताधारी पार्टी का करिन्दा खुश होकर कर्मचारी/अधिकारी को लाभ पहुचाता है यानि अधिकारी/कर्मचारी की दोनों तरफ से बल्ले बल्ले.

जिस गरीब लाचार की जमीन पर कब्जा हुआ होता है, उसे मिलता है बस संतोष कि उसकी जमीन पर बना मकान गिर गया. सबसे अधिक नुकसान अगर होता है तो देश की सम्पदा का. अगर भला करना है तो देश का, गरीब का तो उसकी जमीन बने मकान सहित उस गरीब/कमजोर व्यक्ति को दे दिया जाए या उसे कुछ मुआवजा देकर उस मकान में कोई सरकारी कार्यालय खोल दिया जाए. जिससे लाखों का ईट, बालू, सीमेंट, गिट्टी, सरिया, मजदूरी की बचत भी होगी और अवैध कब्जेदार को दिमागी रुप से परेशान भी करेगी जब वह उस मकान को देखेगा. और इनके जिम्मेदार कर्मचारी/अधिकारी से पूरा हर्ज़ाना वसूला जाए. दण्ड तो उस कर्मचारी/अधिकारी को मिलना चाहिए जिसके इलाके में यह अवैध निर्माण हुआ है. लेकिन असली दोषियों की बल्ले बल्ले होती है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

हिंदी के समर्थन में प्रचंड जनसंख्या खड़ी करने के अंतर्राष्ट्रीय लाभ क्या हैं?

हिंदी के समर्थन में प्रचंड जनसंख्या खड़ी करने के अंतर्राष्ट्रीय लाभ क्या हैं? लाभ गिनाने हों तो चीन और उनकी भाषा मंडारिन की ओर हमें देखना चाहिये जो संख्याबल के मुद्दे पर आज अंगरेजी को भी मात देती है. हिंदी भी दे सकती है.

-लीना मेहंदले

(श्रीमती लीना मेहंदले गोआ की पूर्व सूचना आयुक्त एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा की सेवानिवृत्त अधिकारी हैं और भारतीय भाषाओं और भारतीय संस्कृति के सक्रियतापूर्वक कार्यरत हैं.)

हिंदी पखवाड़े में एक प्रश्न बार-बार उठता है कि क्या हिंदी कोई मौलिक भाषा है? कितनी प्राचीन या कितनी नूतन है? चूँकि इससे अधिक प्राचीन भाषाएं हैं, तो उनकी तुलना में हिंदी की महत्ता कम हो जाती है, इत्यादि. साथ ही यह प्रश्न उठता है कि मैथिली को हिंदी से अलग करके एक प्रमुख भारतीय भाषा के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में क्यों समाविष्ट किया गया? यदि इसी प्रकार भोजपुरी की मांग को भी हम समर्थन देंगे तो इससे हिंदी का बहुत अधिक नुकसान होने वाला है क्योंकि फिर अवधी, ब्रज, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, झारखंडी इत्यादि भाषाएं भी अपने लिए स्वतंत्र भाषा की श्रेणी चाहेंगी और इस प्रकार हिंदी की जनसंख्या घटती चली जाएगी. दूसरी ओर इन भाषाओं के बोलने वाले अपनी अपनी अस्मिता को अधिकाधिक सम्मान देने का मुद्दा बताते हैं. उनमें से कुछ इसका राजनीतिक लाभ भी देखते हैं और उस लाभ की चाहत से इस प्रकार के स्वतंत्र श्रेणी की मांग उठाते रहे हैं. आगे भी उठाते रहेंगे. इस मांग को हम रोक नहीं सकते, और यह दुख भी हिंदी के पक्षधरों को सालता है.

मेरे विचार में हमने प्रश्न को ही गलत तरीके से समझा है. हिंदी बोलने वालों में से कहे कि मैं तो भोजपुरी का पक्षधर या भोजपुरी भाषी हूँ तो इससे किसको क्या लाभ और क्या हानि होती है इसकी विवेचना पहले आवश्यक है. भारत एक विशाल देश है. अति विशालता के कारण निश्चित रूप से हमें कई प्रकार के लाभ मिलते रहे हैं और आगे भी मिलते रहेंगे. इसलिए भारत में टुकड़े गैंग हमारे लिए अत्यंत संकट की बात होगी, इस बात को शायद हम सभी भली भाँति समझते हैं. लेकिन जब भाषा का मुद्दा उठता है तब हमारी बुद्धि विलोपित हो जाती है. हम आज तक यह सम्यक् आकलन नहीं कर पाए हैं और ना ही जनमानस को समझा पाए हैं कि एक पूरे राष्ट्र की १३०करोड़ जनसंख्या की एक राष्ट्रभाषा घोषित होने से अंतरराष्ट्रीय व्यवहारों में हमारा पक्ष कितना अधिक प्रभावी हो जाता है.

हमारे लिये विचारणीय प्रश्न यह होना चाहिये कि हिंदी के समर्थन में प्रचंड जनसंख्या खड़ी करने के अंतर्राष्ट्रीय लाभ क्या हैं और उनका उपयोग कर पाने के लिये हमारे पास क्या क्या पर्याय हैं. लाभ गिनाने हों तो चीन और उनकी भाषा मंडारिन की ओर हमें देखना चाहिये जो संख्याबल के मुद्दे पर आज अंगरेजी को भी मात देती है. हिंदी भी दे सकती है. लेकिन हिंदी के पक्षधरों को समझना पड़ेगा कि कन्नड़, मराठी, असमिया इत्यादि की अस्मिता बचाये बिना, बल्कि अवधी, ब्रज, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, झारखंडी इत्यादि की अस्मिता के बिना हिंदी को समर्थन नही मिलने वाला. और यदि इन सारी भाषाओं के साथ हम हिंदी को एकात्म भाव से जोड़ते हैं तो हिंदी की समृद्धि अधिक तीव्र गति से होगी.

लेकिन इसके लिये हमें सरकारी तंत्र की कुछ परिभाषाओं को बदलना होगा. मेरे सम्मुख हर जनगणना के समय यह संकट खड़ा हो जाता है. मैं हिंदी, मराठी, बंगाली, भोजपुरी और

मैथिली भलीभाँति लिख-पढ़-बोल लेती हूँ. उनके प्रति प्रेम व मालिकाना भाव रखती हूँ. जब जनगणना क्लर्क मुझे कहता है कि आप केवल अपनी मातृभाषा का नाम लिखवाइये, तो मुझे दर्द होता है कि यदि मैं किसी भी एक भाषा का नाम लिखूँ तो अन्य भाषाओं का संख्याबल बढाने में मेरा कोई सहभाग मंजूर नही किया जाता है. तो यह नियमावली किसने बनाई कि जनगणना में केवल मातृभाषा को ही पूछा जाय. इसके स्थान पर यदि पूछा जाय कि आपको ज्ञात हों ऐसी पांच भारतीय भाषाओं को आप लिखवाइये तो हमारे राष्ट्र और भाषाई एकात्मता को बहुत अधिक संबल मिलेगा. और मेरा भी उत्साहवर्धन होगा कि मैं इन भाषाओं की समृद्धि में अधिक योगदान दे सकूँ. लेकिन हिंदी के पक्षधर इस प्रकार के तकनीकी मुद्दे या तो समझते नही हैं या उठाते नही हैं.

मुझे स्मरण आता है एक मराठी प्रकाशक और गुजराती लेखक का संवाद जिसमें गुजराती लेखक ने दुख व्यक्त किया कि मराठी साहित्य का गुजराती अनुवाद तो बड़े पैमाने पर हुआ है लेकिन कितने मराठी भाषी गर्व और प्रेम से कह सकते हैं कि उन्होंने अमुक अमुक गुजराती लेखक को पढ़ा है. उसी प्रकार मैं पूछना चाहती हूँ कि कितने हिंदी साहित्यिक गर्व और प्रेमपूर्वक कह सकते हैं कि उन्होंने तमिल या गोरखाली या मणिपुरी साहित्य को पढा है, सराहा है, जिया है? हम न भूलें कि हर छोटी से छोटी भाषा का साहित्य भी उस भौगोलिक क्षेत्र के संचित ज्ञान व इतिहास का संवाहक होता है. अतः जब तक हिंदी का रोना रोने वाले अपना हृदयाकाश विस्तृत नही करते और हर छोटी से छोटी बोली भाषा की रक्षा के समर्थन में नही खड़े होते तब तक हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित कर पाना और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अस्मितायुक्त राष्ट्र कहलवाना असंभव है. तब तक अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में हम अंगरेजी भाषा के गुलाम राष्ट्र ही माने जायेंगे.

रजत जयंति स्मारिका हेतु विज्ञापन

संस्थान अपना रजत जयंती वर्ष जून 2021 में मनाने जा रहा है. इस अवसर पर एक बहुरंगीय स्मारिका का भी प्रकाशन किया जाएगा. इस बहुरंगीय स्मारिका की प्रति देश-विदेश में संस्थान से जुड़े हुए सदस्यों, हिन्दी संस्थाओं, केन्द्र की कार्यपालिका व सभी राज्यों के माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्रीयों इत्यादि को प्रेषित किया जाना प्रस्तावित है। इस संदर्भ में आप सभी हिन्दी प्रेमी अपने उत्पाद, संस्थान, महाविद्यालय, विद्यालय, पुस्तक इत्यादि का विज्ञापन देना चाहते है तो निम्न विवरणानुसार एवं दर के अनुसार प्रेषित कर सकते हैः-

अंतिम आवरण पृष्ठ	10000/मात्र	अंतिम आवरण पृष्ठ 2/3	8000/मात्र
साधारण पृष्ठ रंगीन (पूर्ण पृष्ठ)	5000/मात्र	साधारण पृष्ठ रंगीन (आधा पृष्ठ)	3000/मात्र
साधारण पृष्ठ रंगीन (चौथाई पृष्ठ)	1500/मात्र	साधारण पृष्ठ स्वेत/श्याम (पूर्ण पृष्ठ)	2000/मात्र
साधारण पृष्ठ स्वेत/श्याम (आधा पृष्ठ)	2000/मात्र	साधारण पृष्ठ स्वेत/श्याम (चौथाई पृष्ठ)	2000/मात्र
शुभकामना संदेश रंगीन	1000/मात्र	शुभकामना संदेश स्वेत/श्याम	500/मात्र

विज्ञापन शुल्क अग्रिम देय है।

विज्ञापन सामग्री, जमा दर का विवरण निम्नलिखित पते, ई-मेल पर स्मारिका विज्ञापन अंकित करते हुए प्रेषित कर सकते है।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**

बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**

खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन 0553875

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

युगपुरुष गुरु गोबिन्द सिंह

खालसा की स्थापना का उद्देश्य लोगों की अत्याचारों से रक्षा करना व उन्हें पूर्णतः भयमुक्त करना था. अन्ततः जन-सुरक्षा के साथ ही अत्याचारियों, आक्रान्ताओं, आततायियों, कट्टरपंथियों व धर्मांधों से लोगों के विश्वास और भारतीय मूल्यों की रक्षा करना था.

-डा० रवीन्द्र कुमार

(पद्मश्री और सरदार पटेल राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित भारतीय शिक्षाशास्त्री प्रोफेसर डा० रवीन्द्र कुमार मेरठ विश्वविद्यलय, मेरठ, उत्तर प्रदेश के पूर्व कुलपति हैं)

गुरु गोबिन्द सिंह एक ऐसे परमवीर और महाप्रतापी महापुरुष के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने उन आततायियों व अत्याचारियों के विरुद्ध धर्मयुद्ध किए, जो कट्टरवादी और धर्मान्ध थेय अपने धर्म सम्प्रदाय को अपनी ढाल बनाकर घोर जन शोषण कर रहे थे. वे एक ऐसे महानायक के रूप में भी भारतवासियों के आदरणीय हैं, जो विशुद्धतः सर्वकल्याण को समर्पित भारतीय मार्ग 'हिन्दुस्तान की समावेशी एवं विकासोन्मुख संस्कृति की रक्षा के लिए बड़े-से-बड़ा बलिदान करने के लिए जीवनभर डटे रहे.' स्वामी विवेकानन्द ने उनके लिए कहा है, 'गुरु गोबिन्द सिंह जैसा महापुरुष न तो (संसार में) कभी उत्पन्न हुआ, न ही उत्पन्न होगा.'

गुरु गोबिन्द सिंह एक उत्कृष्ट समाज सुधारक थे. उन्होंने सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों की आलोचना की. उनका निरन्तर व सक्रिय विरोध किया. दुर्बलों व असहायों की रक्षा के साथ ही मानव-सेवा को अपना परम कर्तव्य- ध र्म बनाने का लोगों का आह्वान किया. देश के मूल सांस्कृतिक मूल्यों-भारतीयता की रक्षा के लिए उन्होंने वह सब कुछ करने का भरसक प्रयास किया, जो उस समय वांछित था. इस सम्बन्ध में, स्वयं अपने जीवन और कार्यों से एक-से-बढ़कर-एक उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया. गुरु गोबिन्द सिंह के लिए, सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा है, 'गुरु गोबिन्द सिंह ने आक्रान्ताओं के अत्याचारों के विरुद्ध जीवन भर सक्रिय संघर्ष किया. भारतीय संस्कृति और मूल्यों की रक्षा के लिए वे आन्तरिक व बाह्य, दोनों, शत्रुओं से लड़े. इस रूप में उनके जैसा महापुरुष इतिहास में विरले ही मिलेगा.'

गुरु गोबिन्द सिंह के जीवन का एक और महत्त्वपूर्ण पहलू भी था, जिसके सम्बन्ध में कम-से-कम वर्तमान पीढ़ी तो लगभग न के बराबर ही जानती है. उन्होंने वर्ष 1699 ईसवीं में पाँच प्यारों (दयाराम खत्री निवासी लाहौर, धर्मदास जाट निवासी मेरठ, मोहकमचन्द दर्जी निवासी द्वारका, हिम्मतराय भिष्ती निवासी जगन्नाथपुरी और साहेबचन्द नाई निवासी बीदर) के साथ आनन्दपुर साहेब में खालसा की स्थापना की. खालसा की स्थापना का उद्देश्य लोगों की अत्याचारों से रक्षा करना व उन्हें पूर्णतः भयमुक्त करना था. अन्ततः जन-सुरक्षा के साथ ही अत्याचारियों, आक्रान्ताओं, आततायियों, कट्टरपंथियों व धर्मांधों से लोगों के विश्वास और भारतीय मूल्यों की रक्षा करना था.

गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा स्थापित खालसा के मूल में निम्नलिखित बातें बहुत ही महत्त्वपूर्ण थीं, जिन्हें हम सभी को जानना चाहिए:

१-जाति-वर्ग के भेदभाव को पूर्णतः नकारकर समाज में समानता स्थापित करना खालसा का प्रथम उद्देश्य था. खालसा की स्थापना के समय उसमें सम्मिलित पाँच प्यारे विभिन्न वर्गों-जातियों का प्रतिनिधित्व करते थे. गुरु गोबिन्द सिंह ने समाज में निम्न-उच्च का कृत्रिम भेदभाव समाप्त कर समानता की सत्यता को केन्द्र में रखकर खालसा की स्थापना के माध्यम से एक अभूतपूर्व और ऐतिहासिक कार्य किया.

२-खालसा में सम्मिलित पाँच प्यारे उत्तर-दाक्षिण और पूरब-पश्चिम, देश के सभी भागों का प्रतिनिधित्व करते थे. इस प्रकार खालसा विभिन्नता में एकता को समर्पित हिन्दुस्तान की सांस्कृ तिक विरासत को प्रकट करता था. गुरु साहेब द्वारा गठित खालसा अद्वितीय था. वह, अपने उद्देश्य के अनुरूप, तत्काल जन-सुरक्षा और सेवा, भारतीय मूल्यों के संरक्षण के लिए कार्यों, मानव-समानता और भारत की सांस्कृ तिक विरासत को प्रकट करते हुए, राष्ट्रीय एकता की नींव को सुदृढ़ करने वाला था. इस हेतु भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला था. स्वयं संगठित भारत के निर्माता सरदार वल्लभभाई पटेल का गुरु गोबिन्द सिंह के सम्बन्ध । में उद्धृत लघु वक्तव्य इस परिप्रेक्ष्य में भी देखना चाहिए.

२-खालसा में विद्यमान गुरु-शिष्य समानता सामंजस्य का उत्कृष्ट उदाहरण था. किसी भी पक्ष की निरंकुशता को रोकने एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों के पूर्ण आदर-सम्मान का परिचायक था. गुरु गोबिन्द सिंह, श्रीगुरुनानकदेव द्वारा स्थापित सिक्ख परम्परा के अन्तिम गुरु थे. एकेश्वरवाद-केन्द्रित, समानता और वृहद् मानव-कल्याण के लिए श्रीगुरुनानकदेव द्वारा प्रारम्भ किए एक महान मिशन को पूर्णता प्रदान करने वाले थे. गुरु गोबिन्द सिंह परम विद्वान और एक श्रेष्ठ दार्शनिक भी थे. उनके विचारों में एकेश्वरवाद था. उनका जीवन और कार्य, किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना, मानव-प्रेम और सेवा को समर्पित थे. गुरु गोबिन्द सिंह ने सुकर्मों को मानव-जीवन की सार्थकता का आधार माना. सुकर्मों को ही उन्होंने धर्म-पालन भी घोषित किया. उन्होंने कहा, 'धर्मयुक्त कर्म ही करें, ताकि वृहद् जन-कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके. इसलिए, सदा सुकर्म करें, ताकि पुनः अन्धकार का सामना न करना पड़े. पापकर्मों में सदैव अक्रिय हों. कर्म-फल इच्छा का त्यागकर (सुकर्मों में) सक्रिय हों. लेने-देने की क्रिया-वासना में निष्क्रिय हों. देने में सदैव ही उत्साहित रहें. भ्रम को कर्म से पृथक रखें. सुकर्मों में शिथिलता न आने दें. कर्मों को अधर्म से दूर रखें. सदैव पवित्रता और शक्ति के साथ कर्मों में संलग्न रहें. कर्मों को ईश्वर-भक्ति मानकर करें. कर्म, ज्ञान समझकर करें.'

गुरु गोबिन्द सिंह ने मानव-प्रेम और सेवा को परम सत्य-ईष्वर-प्राप्ति का मार्ग घोषित किया. उन्होंने कहा :

'साचुकहों सुन लेहुसभै।
जिन प्रेम कियोतिन ही प्रभपाइयो।।'

अर्थात्, 'मैं सच कहता हूँ, सभी सुन लें! जो (मानव-प्रेम) करते हैं, वे ही परमात्मा को प्राप्त करते हैं.'

गुरु गोबिन्द सिंह ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में स्वयं मानव-प्रेम और जन-रक्षा का एक-से बढ़कर-दूसरा उदाहरण प्रस्तुत किया. धर्म-रक्षार्थ बड़े-से-बड़ा बलिदान किया. जो उनके प्रतिद्वन्द्वी थेय जिनके विरुद्ध उन्होंने लड़ाइयाँ लड़ीं, उनके प्रति भी उनका व्यवहार मानवता पूर्ण रहा. वे सदैव ही क्षमाशील और करुणामय रहे.

गुरु गोबिन्द सिंह परमवीर थे. अत्याचारों और अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले परम योद्धा थे. वे भारतीय संस्कृति के संरक्षक तथा धर्मरक्षक थे. वे, जैसा कि कहा है, एक परम विद्वान तथा उत्कृष्ट चिन्तक भी थे. वीरता और ज्ञान-विद्ववता का उनमें अद्वितीय संगम दृसंयोजन था. इन्हीं विशिष्टताओं के बल पर वे युगपुरुष के रूप में स्थापित हुए. वे एक महानतम भारतीय सिद्ध हुए. गुरु गोबिन्द सिंह आने वाली न जाने कितनी पीढ़ियों को अत्याचारों व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कर विजित होने व भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्यों और धर्मरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे.

सभी रचनाकारों/ पत्रिका के पाठकों लिए आवश्यक सूचना

पत्रिका का मार्च 2021 अंक महिला रचनाकार विशेषांक होगा। इस अंक में केवल महिला रचनाकारों के सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक लेख, कहानियां, कविताएं, समीक्षा आदि प्रकाशित होगें। इच्छुक महिला रचनाकार अपनी रचनाएं प्रत्येक दशा में 15 फरवरी 2021 के पूर्व ई-मेल या ह्वाट्सएप पर भेज सकते है। इस अंक की अतिथि सम्पादक होगी डॉ० सीमा वर्मा, लखनऊ
ईमेलः vsneshsamaj@rediffmail.com

हिन्दी के लिए लड़ने वाला सबसे बड़ा वकील : महात्मा गाँधी

देश जब आजाद होगा तो उसकी एक राष्ट्रभाषा होगी और वह राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी होगी क्योंकि वह इस देश की सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है. वह अत्यंत सरल है और उसमें भारतीय विरासत को वहन करने की क्षमता है.

- प्रो. अमरनाथ

लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और हिन्दी विभागाध्यक्ष है.

गाँधी जी ने हिन्दी के आन्दोलन को आजादी के आन्दोलन से जोड़ दिया था. उनका ख्याल था कि देश जब आजाद होगा तो उसकी एक राष्ट्रभाषा होगी और वह राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी होगी क्योंकि वह इस देश की सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है. वह अत्यंत सरल है और उसमें भारतीय विरासत को वहन करने की क्षमता है. उसके पास देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि भी है. जो फारसी लिपि जानते हैं वे इस भाषा को फारसी लिपि में लिखते हैं. इसे हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी.

आरंभ से ही गांधीजी के आन्दोलन का यह एक मुख्य मुद्दा था. अपने पत्रों 'नवजीवन' और 'यंग इंडिया' में वे बराबर इस विषय पर लिखते रहे. हिन्दी-हिन्दुस्तानी का प्रचार करते रहे. जहां भी मौका मिला खुद हिन्दी में भाषण दिया. गांधी जी के प्रयास से 1925 ई. के कानपुर अधिवेशन में कांग्रेस का काम काज हिन्दुस्तानी में करने का प्रस्ताव पारित हुआ. इस प्रस्ताव के पास होने के बाद गाँधी जी ने इसकी रिपोर्ट अपने पत्रों 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' दोनो में दी थी. उन्होंने 'यंग इंडिया' में लिखा था, 'हिन्दुस्तानी के उपयोग के बारे में जो प्रस्ताव पास हुआ है, वह लोकमत को बहुत आगे ले जाने वाला है. हमें अब तक अपना काम काज ज्यादातर अंग्रेजी में करना पड़ता है, यह निस्संदेह प्रतिनिधियों और कांग्रेस की महा समिति के ज्यादातर सदस्यों पर होने वाला एक अत्याचार ही है. इस बारे में किसी न किसी दिन हमें आखिरी फैसला करना ही होगा. जब ऐसा होगा तब कुछ वक्त के लिए थोड़ी दिक्कतें पैदा होंगी, थोड़ा असंतोष भी रहेगा. लेकिन राष्ट्र के विकास के लिए यह अच्छा ही होगा कि जितनी जल्दी हो सके, हम अपना काम हिन्दुस्तानी में करने लगें.'(यंग इंडिया 7.1.1926)इसी तरह उन्होंने 'नवजीवन' में लिखा, 'जहां तक हो सके, कांग्रेस में हिन्दी-उर्दू ही इस्तेमाल किया जाय, यह एक महत्व का प्रस्ताव माना जाएगा. अगर कांग्रेस के सभी सदस्य इस प्रस्ताव को मानकर चलें, उस पर अमल करें तो कांग्रेस के काम में गरीबों की दिलचस्पी बढ़ जाय.'(नवजीवन, 3.1.1928)

गाँधी जी ने 20 अक्टूबर 1917 ई. को गुजरात के द्वितीय शिक्षा सम्मेलन में दिए गए अपने भाषण में राष्ट्रभाषा के कुछ विशेष लक्षण बताए थे, वे निम्न हैं-

-वह भाषा सरकारी नौकरों के लिए आसान होनी चाहिए.

- उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक कामकाज शक्य होना चाहिए.

- उस भाषा को भारत के ज्यादातर लोग बोलते हों.

- वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान होनी चहिए.

- उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अस्थायी स्थिति पर जोर न दिया जाये.

उक्त पाँच लक्षणों को गिनाने के बाद गाँधी जी ने कहा था कि हिन्दी भाषा में ये सारे लक्षण मौजूद हैं और फिर हिन्दी भाषा के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा, 'हिन्दी भाषा मैं उसे कहता हूँ, जिसे उत्तर में हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं और देवनागरी या फारसी (उर्दू) लिपि में लिखते हैं. ऐसी दलील दी जाती है कि हिन्दी और उर्दू दो अलग-अलग भाषाएं हैं. यह दलील सही नहीं है. उत्तर भारत में मुसलमान और हिन्दू एक ही भाषा बोलते हैं. भेद पढ़े लिखे लोगों ने डाला है. इसका अर्थ यह है कि हिन्दू शिक्षित वर्ग ने हिन्दी को केवल संस्कृमय बना दिया है. इस कारण कितने ही मुसलमान उसे समझ नहीं सकते है. लखनऊ के मुसलमान भाइयों ने उस उर्दू में फारसी भर दी है और उसे हिन्दुओं के समझने के अयोग्य बना दिया है. ये दोनो केवल पंडिताऊ भाषाएं हैं और इनको जनसाधारण में कोई स्थान प्राप्त

नहीं है. मैं उत्तर में रहा हूँ, हिन्दू मुसलमानों के साथ खूब मिला जुला हूँ और मेरा हिन्दी भाषा का ज्ञान बहुत कम होने पर भी मुझे उन लोगों के साथ व्यवहार रखने में जरा भी कठिनाई नहीं हुई है. जिस भाषा को उत्तरी भारत में आम लोग बोलते हैं, उसे चाहे उर्दू कहें चाहे हिन्दी, दोनो एक ही भाषा की सूचक है. यदि उसे फारसी लिपि में लिखें तो वह उर्दू भाषा के नाम से पहचानी जाएगी और नागरी में लिखें तो वह हिन्दी कहलाएगी.'
(सम्पूर्ण गाँधी वांग्मय, खण्ड-10, पृष्ठ-29)

गाँधी जी चाहते थे कि बुनियादी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सब कुछ मातृभाषा के माध्यम से हो. दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान ही उन्होंने समझ लिया था कि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा हमारे भीतर औपनिवेशिक मानसिकता बढ़ाने की मुख्य जड़ है. 'हिन्द स्वराज' में ही उन्होंने लिखा कि, 'करोड़ों लोगों को अंग्रेजी शिक्षण देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है. मैकाले ने जिस शिक्षण की नींव डाली, वह सचमुच गुलामी की नींव थी. उसने इसी इरादे से वह योजना बनाई, यह मैं नहीं कहना चाहता, किन्तु उसके कार्य का परिणाम यही हुआ है. हम स्वराज्य की बात भी पाराई भाषा में करते हैं, यह कैसी बड़ी दरिद्रता है? यह भी जानने लायक है कि जिस पद्धति को अंग्रजों ने उतार फेंका है, वही हमारा श्रृंगार बनी हुई है. वहां शिक्षा की पद्धतियां बदलती रही हैं. जिसे उन्होंने भुला दिया है, उसे हम मूर्खताबस चिपकाए रहते हैं. वे अपनी मातृभाषा की उन्नति करने का प्रयत्न कर रहे हैं. वेल्स, इंग्लैण्ड का एक छोटा सा परगना है. उसकी भाषा धूल के समान नगण्य है. अब उसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है. अंग्रेजी शिक्षण स्वीकार करके हमने जनता को गुलाम बनाया है. अंग्रेजी शिक्षण से दंभ-द्वेष अत्याचार आदि बढ़े हैं. अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों ने जनता को ठगने और परेशान करने में कोई कसर

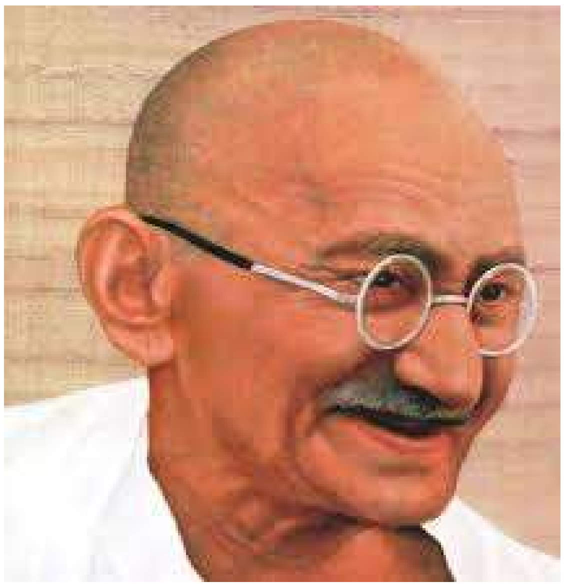

नहीं रखी. भारत को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग ही हैं. जनता की हाय अंग्रेजों को नहीं हमको लगेगी.' (संपूर्ण गांधी वांग्मय, खण्ड-10, पृष्ठ-55) अपने अनुभवों से गाँधी जी ने निष्कर्ष निकाला था कि, 'अंग्रेजी शिक्षा के कारण शिक्षितों और अशिक्षितों के बीच कोई सहानुभूति, कोई संवाद नहीं है. शिक्षित समुदाय, अशिक्षित समुदाय के दिल की धड़कन को महसूस करने में असमर्थ है.' (शिक्षण और संस्कृति, सं. रामनाथ सुमन, पृष्ठ-164)

गाँधी जी कहते थे कि नेता अंग्रेजी में भाषण दें, जनता समझे नहीं, ऐसे नेता न तो देश में कोई बड़ा परिवर्तन कर सकते थे न उनकी राजनीति जनता की राजनीति बन सकती थी. सन् 1931 में गाँधी जी ने लिखा था, 'यदि स्वराज अंग्रेजी पढ़े भारतवासियों का है तो संपर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी. यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों, सताए हुए अछूतों के लिए है तो संपर्क भाषा केवल हिन्दी ही हो सकती है.' (उद्धृत, भाषा की अस्मिता और हिन्दी का वैश्विक संदर्भ, पृष्ठ-562)

गाँधी जी नें इंग्लैण्ड में रहकर कानून की पढ़ाई की थी और बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी. अपने देश के संदर्भ में अंग्रेजी शिक्षा की अनिष्टकारी भूमिका को पहचानने में उनकी अनुभवी दृष्टि धोखा नहीं खा सकती थी. दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए ही वे अच्छी तरह समझ चुके थे कि भारत का कल्याण उसकी अपनी भाषाओं में दी जाने वाली शिक्षा से ही संभव है. भारत आने के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एक उद्घाटन समारोह में जब लगभग सभी गणमान्य महापुरुषों नें अपने अपने भाषण अंग्रेजी में दिए, एक मात्र गाँधी जी ने अपना भाषण हिन्दी में देकर अपना इरादा स्पष्ट कर दिया था. संभवतः किसी सार्वजनिक समारोह में यह उनका पहला हिन्दी भाषण था. उन्होंने कहा, 'इस महान विद्यापीठ के प्रांगण में अपने ही देशवासियों से अंग्रेजी में बोलना पड़े, यह अत्यंत अप्रतिष्ठा और लज्जा की बात है. मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रबंध किया जाएगा. हमारी भाषा हमारा

ही प्रतिबिंब है और इसलिए यदि आप मुझसे यह कहें कि हमारी भाषाओं में उत्तम विचार अभिव्यक्त किए ही नहीं जा सकते तब तो हमारा संसार से उठ जाना ही अच्छा है. क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी यह सोच सकता है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी भी दिन भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है? फिर राष्ट्र के पावों में यह बेड़ी किसलिए? यदि हमें पिछले पचास वर्षों में देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा दी गयी होती, तो आज हम किस स्थिति में होते! हमारे पास एक आजाद भारत होता, हमारे पास अपने शिक्षित आदमी होते जो अपनी ही भूमि में विदेशी जैसे न रहे होते, बल्कि जिनका बोलना जनता के हृदय पर प्रभाव डालता.' (शिक्षण और संस्कृति, सं. रामनाथ सुमन, पृष्ठ-765) संभव है यहां कुछ लोग मातृभाषा से तात्पर्य अवधी, ब्रजी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका आदि लें क्योंकि आजकल चन्द स्वार्थी लोगों द्वारा अपनी-अपनी बोलियों को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए उन्हें मातृभाषा के रूप में प्रचारित किया जा रहा हैं और इस तरह हिन्दी को टुकड़े टुकड़े में बांटने की कोशिश की जा रही है. ऐसे लोग न तो अपने हित को समझते हैं और न इतिहास की गति को. वे अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाते हैं खुद हिन्दी की रोटी खाते हैं और भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी तथा राजस्थानी आदि को संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं ताकि इन क्षेत्रों की आम जनता को जाहिल और गँवार बनाये रख सकें और भविष्य में भी उनपर अपना आधिपत्य कायम रख सकें. ऐसे लोगों को गाँधी जी का निम्नलिखित कथन शायद सद्बुद्धि दे. गाँधी जी ने 1917 ई. में हिन्दी क्षेत्र के एक शहर भागलपुर में भाषण देते हुए कहा था, "आज मुझे अध्यक्ष का पद देकर और हिन्दी में व्यख्यान देने और सम्मेलन का काम हिन्दी में चलाने की अनुमति देकर आप विद्यार्थियों ने मेरे प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया है...इस सम्मेलन का काम इस प्रान्त की भाषा में ही और वही राष्ट्रभाषा भी है---करने का निश्चय करके आप ने दूरन्देशी से काम लिया है. इसके लिए मैं आप को बधाई देता हूँ. मुझे आशा है कि आप लोग यह प्रथा जारी रखेंगे.' (शिक्षण और संस्कृति, सं. रामनाथ सुमन, पृष्ठ-5)

विभिन्न संस्कृतियों धर्मावलम्बियों, भाषाओं वाले इस विशाल देश में एकता समन्वय के मार्ग पर चलकर ही कायम की जा सकती थी. हिन्दुस्तानी के बहाने गाँधी जी देश को एक सहज, सर्वसुलभ और सबको जोड़ने वाली भाषा दे रहे थे और सामाजिक समरसता की पुख्ता नींव भी डाल रहे थे.

स्पष्ट है कि सम्मेलन का काम इस प्रान्त की भाषा में ही और वही राष्ट्र भाषा भी है. कहकर गाँधी जी ने यह अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया था कि बिहार प्रान्त की भाषा और मातृभाषा भी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है, न कि कोई अन्य बोली या भाषा. गाँधी जी का विचार था कि मां के दूध के साथ जो संस्कार और मीठे शब्द मिलते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए वह विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने में टूट जाता है. हम ऐसी शिक्षा के वशीभूत होकर मातृद्रोह करते है.

स्पष्ट है गाँधी जी ने हिन्दी के स्वरूप की जो अवधारणा प्रस्तुत की उसके केन्द्र में हिन्दुओं और मुसलमानो के बीच बढ़ रही खाई को पाटने की आकाँक्षा काम कर रही थी. विभिन्न संस्कृतियों धर्मावलम्बियों, भाषाओं वाले इस विशाल देश में एकता समन्वय के मार्ग पर चलकर ही कायम की जा सकती थी. हिन्दुस्तानी के बहाने गाँधी जी देश को एक सहज, सर्वसुलभ और सबको जोड़ने वाली भाषा दे रहे थे और सामाजिक समरसता की पुख्ता नींव भी डाल रहे थे. अनायास नहीं है कि गाँधी जी के द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा तथा उस जैसी अन्य कई संस्थाओं का मूलमंत्र है, 'एक हृदय हो भारत जननी.'

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन से हिन्दी और हिन्दुस्तानी के मुद्दे को लेकर गाँधी जी का लंबा विवाद चला था और वर्षों तक चले पत्राचार के बाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा था. यह भी सही है कि देश-विभाजन और साम्प्रदायिकता के चरम ऊभार ने हिन्दी-उर्दू के मसले को चरम परिणति तक पहुँचा दिया और राजर्षि टण्डन के समर्थकों की संख्या अधिक होने के कारण मत विभाजन में हिन्दी का पलड़ा भारी रहा किन्तु पाकिस्तान बनने के बाद आज भी जब हमारे देश में मुसलमान बड़ी संख्या में मौजूद हैं, गाँधी जी के समन्वय का मार्ग ही एक मात्र सही रास्ता है.

हिन्दी का सबसे ज्यादा विरोध जहाँ से हो सकता था गाँधीजी ने वहाँ हिन्दी के प्रचार के लिए अथक परिश्रम किया. उन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिए दक्षिण की कई बार यात्रा की. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास की स्थापना गाँधी जी ने खुद की थी और अपने पुत्र देवदास गाँधी को मद्रास भेजा, जो वहाँ रहकर हिन्दी का प्रचार करते रहे. गाँधी जी आजीवन सभा के अध्यक्ष रहे. बाद में डा. राजेन्द्र प्रसाद और लाल बहादुर शास्त्री भी सभा के अध्यक्ष रहे. गाँधी जी ने ही 1935 में काका साहब कालेलकर को इसके निरीक्षण और सुधार के लिए वहाँ भेजा और उन्हीं की सिफारिश पर दक्षिण के चारो प्रान्तों- केरल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेष और तमिलनाडु में इसकी शाखाएं स्थापित हुईं. निश्चित रूप से गाँधी जी के प्रयास के कारण ही देश भर में और खास तौर पर दक्षिण में दर्जनों संस्थाएं स्थापित हुईं और देश के कोने-कोने में हिन्दी के प्रचार का काम होने लगा. कर्नाटक में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति-बैंगलोर, हिन्दी प्रचार समिति-बैंगलोर, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्-बैंगलोर, केरल हिन्दी प्रचार सभा तिरुवनंतपुरम्, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, हिन्दी प्रचार समिति जहीराबाद, महाराष्ट्र राष्ट्र भाषा सभा-पुणे, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा-मुंबई, मुंबई हिन्दी विद्यापीठ-मुंबई, मुंबई प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा -मुंबई, गुजरात विद्यापीठ-अहमदाबाद, सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति राजकोट, असम राष्ट्रभाषा प्रचार सभा गुवाहाटी, ओड़िसा राष्ट्रभाषा परिषद् जगन्नाथ धाम पुरी, मध्य भारत हिन्दी प्रचार समिति इंदौर, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, हिन्दी विद्यापीठ देवघर, हिन्दुस्तानी अकादमी इलाहाबाद आदि संस्थाएं गांधी जी की प्रेरणा से ही खुलीं. इतना ही नहीं, गाँधीजी के अनुयायियों ने भी उसी निष्ठा से प्रयत्न जारी रखा. मोटूरि सत्यनारायण के प्रयास से आगरा में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान स्थापित हुआ जिसकी लगभग आधा दर्जन शाखाएं देश के विभिन्न अहिन्दी भाषी प्रान्तों में है और हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं. इसी तरह गाँधी जी के दूसरे अनुयायी आचार्य बिनोवा भावे के प्रयास से नागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिए नागरी लिपि परिषद् का गठन हुआ जो आज भी सक्रिय है.

गाँधी जी के व्यक्तित्व का इतना असर था कि देश भर में निष्ठावान हिन्दी प्रचारकों की एक फौज खड़ी हो गई. केरल में दामोदरन उन्नी, पी.के. केशवन नायर, नारायण देव, पी. नारायण, पी. जी. वासुदेव, के. वासुदेवन पिल्लई, जी. बालकृष्ण पिल्लई, प्रो. ए. चंद्रहासन, आर. जनार्दन पिल्लई, के. भास्करन नायर, पी. लक्ष्मी कुट्टी अम्मा, पी. कृष्णन, एन. बेंकिटेश्वरन, सी. जी. गोपालकृष्णन, जी. गोपीनाथन, के. रवि वर्मा तामिलनाडु के शंकर राज नायडू, विश्वनाथ अय्यर, एन. सुन्दरम, र. शौरिराजन, कल्याण सुन्दरम, श्रीनिवासाचार्य, एस. महालिंगम, एम.श्रीधरन, तुलसी जयरामन, पी. जयरामन, एस. श्रीकण्ठमूर्ति, बालशौरि रेड्डी, एम. शेषन, महाराष्ट्र के चंद्रकान्त बांदिवडेकर, सुशीला गुप्ता, गुरुनाथ जोशी, गुजरात के वजुभाई शाह, पेरीन बहन कैप्टेन, कर्नाटक के एम.एस. कृष्णमूर्ति, एस. आर. शिवमूर्ति स्वामी, बी. वै. ललिताम्बा, नागराज नागप्पा, मे. राजेश्वरैय्या, आर. के. गोरेस्वामी, हिरण्मय, भारती रमणाचार्य, अगरम रंगैय्या, तीता शर्मा और उनकी पत्नी तिरुमलै राजम्मा, श्री कण्ठमूर्ति, बेंकट रामैय्या, सत्यव्रत, जम्बूनाथन, बी. एस.शान्ताबाई, यशोधरा दासप्पा, कोडागिन राजम्मा, आर. आर. दिवाकर, कल्याणम्मा, निट्टूर श्रीनिवासराव, दा. कृ. भारद्वाज, के. नागप्पा अल्वा, सी.बी. रामराव, पुट्टण्णा चेट्टि, नागेश हथ्वार, काटम लक्ष्मीनारायण, आन्ध्र प्रदेश के मोटूरि सत्यनारायण, बेमूरि आँजनेय शर्मा तथा उनके भाई बेमूरि राधाकृष्ण शर्मा, पी. बी. नरसिंह राव, पोट्टि श्रीरामलु, वीरेशलिंगम पन्तुलू, नीलम संजीव रेड्डी, बेजवाड़ा गोपाल रेड्डी, भीमसेन निर्मल, मुनीम जी आदि उनमें से कुछ प्रमुख हैं.

पूर्वोत्तर में हिन्दी का प्रचार करने का काम गाँधी जी ने अपने एक प्रमुख अनुयायी बाबा राघवदास को सौंपा. सन् 1926 ई. में हिन्दी के प्रचार के लिए अनेक नेताओं ने पूर्वांचल का दौरा किया. असम के महान जननेता और गाँधीजी के अनन्य अनुयायी गोपीनाथ बरदलै की अध्यक्षता में गुवाहाटी में 1936 ई. में हिन्दी प्रचार समिति बनी जिसमें काका साहब कालेलकर उपस्थित थे. इसके बाद समूचे पूर्वोत्तर में हिन्दी प्रचार की लहर चल पड़ी.सुदूर मणिपुर में मणिपूर हिन्दी परिषद जैसी संस्थाएं आज भी सक्रिय हैं. नवीनचंद्र कलिता, हेमकान्त भट्टाचार्य, रजनीकान्त चक्रवर्ती, कमल नारायण, नवारुण वर्मा जैसे हिन्दी सेवियों ने अपनी पूरी जिन्दगी हिन्दी के लिए न्योछावर कर दी.

हम पूण्यतिथि के अवसर पर अपने राष्ट्रपिता द्वारा हिन्दी के लिए किए गए अविश्वसनीय से प्रतीत होने वाले कार्यों का स्मरण करते हैं और उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं.

भारतीय भाषाओं में है आत्मनिर्भरता का मूल

शिक्षा पाने के दौरान बच्चा भाषा भी सीखता है और भाषा के सहारे विभिन्न विषयों का ज्ञान भी प्राप्त करता है. उसकी योग्यता, कौशल और मानसिकता के विकास पर उसके आस-पास फैली पसरी भाषा की दुनिया का बड़ा व्यापक असर पड़ता है. भाषा के सहारे ही सोचना संभव होता है और भाषा में दक्षता आने पर ही जीवन के विभिन्न कार्य हो पाते हैं.

-प्रो० गिरिश्वर मिश्र
पूर्व कुलपति,
महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

भाषा संवाद में जन्म लेती है और उसी में पल बढ कर समाज में संवाद को रूप से संभव बनाती है. संवाद के बिना समाज भी नहीं बन सकता न उसका काम ही चल सकता है. इसलिए समाज भाषा को जीवित रखने की व्यवस्था भी करता है. इस क्रम में भाषा का शिक्षा के साथ गहरा सरोकार बन जाता है. शिक्षा पाने के दौरान बच्चा भाषा भी सीखता है और भाषा के सहारे विभिन्न विषयों का ज्ञान भी प्राप्त करता है. उसकी योग्यता, कौशल और मानसिकता के विकास पर उसके आस-पास फैली पसरी भाषा की दुनिया का बड़ा व्यापक असर पड़ता है. भाषा के सहारे ही सोचना संभव होता है और भाषा में दक्षता आने पर ही जीवन के विभिन्न कार्य हो पाते हैं. इस तरह भाषा पकड़ में आने के साथ बच्चे को अपने ऊपर और अपने परिवेश पर नियंत्रण का अहसास होने लगता है. भाषा से मिलने वाली शक्ति को आत्मसात करते हुए व्यक्ति आत्म निर्भरता का पाठ पढ़ता है.

मनुष्य के कृत्रिम आविष्कारों में भाषा निश्चित ही सर्वोत्कृष्ट है. वह प्रतीक (अर्थात कुछ भिन्न का विकल्प या अनुवाद!) होने पर भी कितनी समर्थ और शक्तिशाली व्यवस्था है इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो भाषा से अछूता हो. जागरण हो या स्वप्न हम भाषा की दुनिया में ही जीते हैं. हमारी भावनाएं, हास परिहास, पीड़ा की अभिव्यक्तियों और संवाद को संभव बनाते हुए भाषा सामाजिक जीवन को संयोजित करती है. उसी के माध्यम से हम दुनिया देखते भी हैं और रचते भी हैं. भाषा की बेजोड़ सर्जनात्मक शक्ति साहित्य, कला और संस्कृति के अन्यान्य पक्षों में प्रतिविम्बित होती है. इस तरह भाषा हमारे अस्तित्व की सीमाएं तंय करती चलती है. विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के संकलन, संचार और प्रसार के लिए भाषा अपरिहार्य हो चुकी है. भाषा के आलोक से ही हम काल का भी अतिक्रमण कर पाते हैं और संस्कृति का प्रवाह बना रहता है. हमारी भाषा नीति और शिक्षा के आयोजन में अभी भी जरूरी संजीदगी नहीं आ सकी है. इसका स्पष्ट कारण हमारी औपनिवेशिक मनोवृत्ति है जो आवरण का कार्य कर रही है और जिसे हम अकाट्य नियति मान बैठे हैं. इसका परिणाम यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी स्वाधीनता और स्वराज्य हमसे कोसों दूर है. भाषा और संस्कृति साथ-साथ चलते हैं. यदि सोच -विचार एक भाषा में करें और शेष जीवन दूसरी भाषा में जिए तो भाषा और जीवन दोनों में ही प्रामाणिकता क्षतिग्रस्त होती जायगी. दुर्भाग्य से आज यही घटित हो रहा है. दोफांके का जीवन जीने के लिए हम सब अभिशप्त हो चले हैं. ऐसे में एक विभाजित मन वाले संशयग्रस्त व्यक्तित्व की रचना होती है. अपनी भाषा का उपयोग जीवंत राष्ट्रीय जीवन का आधार होता है.

शिक्षा क्षेत्र की जड़ता और उसकी सीमित उपलब्धियों को ले कर सरकारी और गैर सरकारी प्रतिवेदनों में बार-बार चिंता जताई गई है और समस्या के विकराल होते जाने को ले कर उपज रहे आसन्न संकट की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है. अब बच्चे अधिक संख्या में शिक्षालय में तो जाते हैं पर वहां टिकते नहीं हैं और जो टिकते भी हैं तो उनका सीखना बड़ा ही कमजोर हो रहा है (वे अपनी कक्षा के नीचे की कक्षा की योग्यता नहीं रखते). ऊपर से उनके लिए सीखने के लिए भारी भरकम पाठ्यक्रम भी लाद दिया गया है जिसे ढोना (भौतिक और मानसिक दोनों ही तरह से!) भारी पड़ रहा है. यह सब एक खास भाषाईसंदर्भ

में हो रहा है. आज की स्थिति में अंग्रेजी भाषा नीचे से ऊपर शिक्षा के लिए मानक के रूप में प्रचलित और स्वीकृत है जब कि हिंदी समेत अन्य भाषाएं दोयम दर्जे की हैं. यह मान लिया गया है कि सोच-विचार और ज्ञान-विज्ञान के लिए अंग्रेजी ही माता-पिता रूप में है और उत्तम शिक्षा उसी में दी जा सकती है. इस स्थिति में हम परमुखापेक्षी होते जा रहे हैं.

शिक्षा नीति-2020 में भारतीय भाषाओं को लेकर जो विचार दिए गए हैं उनसे कुछ आशा बंधती है. यह संतोष की बात है कि यह नीति औपचारिक दुनिया में भारतीय भाषाओं के प्रति उदासीनता और इस कारण उनके अस्तित्व पर आ रहे संकट को रेखांकित करती है. भाषा द्वारा व्यक्ति और समाज की चेतना के निर्माण के महत्व को देखते हुए यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि भाषा का सवाल केवल शिक्षण माध्यम और विषय तक ही सीमित नहीं है. इसके साथ शिक्षा के मूल सरोकार, राष्ट्रीय एकता, अवसरों की समानता, संस्कृति के पोषण और आर्थिक विकास के प्रश्न भी गुंथे हुए हैं. अतएव भाषा के बारे में फैसला सिर्फ बहुमत के आधार या प्रयोग की सुलभता के आधार पर नहीं लिया जा सकता. उसमें विविधता और समावेशन का पूरा स्थान होना चाहिए. नई शिक्षा नीति में भाषा की उपस्थिति को भाषा-शिक्षण, शिक्षा के माध्यम के रूप में, भाषा को अध्ययन विषय के रूप में और भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ के प्रति संवेदना की दृष्टि से समझा जा सकता है. इस नीति के अनुसार भारतीय भाषाएं पूर्व विद्यालयी स्तर से लेकर शोध के स्तर तक औपचारिक शिक्षा का माध्यम बननी चाहिए. साथ ही भाषाओं को केवल उनके साहित्य तक सीमित न रख इतिहास, कला, संस्कृति तथा विज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाने का माध्यम बनाया जाना चाहिए. इस तरह भाषा के समुचित प्रयोग द्वारा समाज को लोकतांत्रिक और समावेशी बनाया जा सकता है.

प्राथमिक और स्कूली स्तर पर पाठ्यचर्या विकराल भौतिक और मानसिक बोझ का एक बड़ा कारण विद्यार्थी के लिए स्वीकृत विषयवस्तु और उसके गृह संदर्भ में प्रयुक्त भाषाओं के बीच विद्यमान अंतर है. भाषा का सम्बन्ध केवल साहित्य से है, इस धारणा को तोड़ कर उसकी अन्य क्षेत्रों में व्याप्ति को समझना जरूरी है.

यह भी गौर तलब है कि प्राथमिक और स्कूली स्तर पर पाठ्यचर्या विकराल भौतिक और मानसिक बोझ का एक बड़ा कारण विद्यार्थी के लिए स्वीकृत विषयवस्तु और उसके गृह संदर्भ में प्रयुक्त भाषाओं के बीच विद्यमान अंतर है. भाषा का सम्बन्ध केवल साहित्य से है, इस धारणा को तोड़ कर उसकी अन्य क्षेत्रों में व्याप्ति को समझना जरूरी है. तभी अनुवाद और रटन की अध्ययन संस्कृति के स्थान पर मौलिक सृजन की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकेगा. आज की प्रचलित परिपाटी में कुछ विषयों को अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाया जाना रूढ़ सा बना दिया गया है. सूचना एवं प्रौद्योगिकी, चिकित्सा एवं विधि के विषय इसके प्रमुख उदाहरण है. इस दिशा में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पहल होनी चाहिए. यह भी उल्लेखनीय है कि कला, शिल्प, खेल और देशज ज्ञान को अपनी भाषा के माध्यम से ही खोजा और संरक्षित किया जा सकता है. नीति का यह मानना है कि ज्ञान, विज्ञान और कौशल की दृष्टि से भाषाओं को रोजगार की दुनिया में स्थापित किया जाना चाहिए. शिक्षा नीति में प्राचीन भाषाओं के लिए आदरभाव विकसित करने और भाषा शिक्षकों की नियुक्ति को प्रोत्साहन देने का सुझाव स्वागत योग्य है. सूचना क्रान्ति को अंग्रेजी के प्रभाव से मुक्त करते हुए भारतीय भाषाओं के माध्यम को सार्थक बनाने हेतु भारतीय भाषाओं के शिक्षण को समर्थ बनाने के लिए विचार करना होगा. भारतीय भाषाएं इतनी समर्थ हैं कि इनके द्वारा ज्ञान का सृजन और स्थानान्तरण किया जा सकता है. साथ ही औपचारिक शिक्षा, अर्थव्यवस्था एवं अन्य सामाजिक-राजनीतिक कार्यों के लिए इसका प्रयोग सुगमतापूर्वक किया जा सकता है.

जहां तक पूर्व विद्यालयी शिक्षा का प्रश्न है मातृभाषा का प्रयोग करते हुए सोचने विचारने की प्रक्रिया का सूत्रपात करना ही सर्वथा हितकर होगा. बच्चे की भाषा सीखने की सहजात क्षमता का उपयोग करते हुए सीखने का सक्रिय परिवेश बनाया जा सकता है. बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए चित्र वाली किताबों एवं अन्य भाषा शिक्षण सहायक सामग्री का विकास करना आवश्यक होगा. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षण को अनिवार्यतः लागू किया जाना ही श्रेयस्कर है. इस हेतु गणित, विज्ञान आदि विषयों में रोचक पुस्तकों की रचना एवं अन्य

सामग्रियों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना होगा. भारतीय भाषाओं में बालोपयोगी साहित्य के लिए राष्ट्रीय मिशन को संचालित कर युद्ध स्तर पर यह कार्य करना होगा. नीति में तो उच्च शिक्षा तक को भारतीय भाषाओं को के माध्यम से संचालित करने के अवसर का विस्तार करने की संस्तुति की गई है. यह बात सर्व विदित है कि चीनी, जापानी, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, हिब्रू आदि गैर अंग्रेजी भाषा माध्यम में उच्चतम स्तर की शिक्षा दी जा रही है और शोध किया जा रहा है. अतः भारतीय भाषाओं में भी उच्च स्तरीय शोध होना चाहिए. नई शिक्षा नीति कला, शिल्प, इतिहास, देशज विज्ञान और लोक विद्या को भी औपचारिक शिक्षा के दायरे में लाने को सोच रही है. इनमें प्रवेश के लिए अपनी भाषा ही उपयुक्त होगी. भारतीय भाषाओं को व्यावसायिक शिक्षा में यथोचित स्थान देते हुए रोजगार बाजार से जोड़ना होगा.

साथ ही शैक्षिक विकास की दृष्टि से बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा यदि उनकी घर की भाषा या मातृभाषा में दी जाती है तो विषय में प्रवेश सरल और रुचिकर तो होगा ही वह संस्कृति को भी जीवंत रखेगा. उनकी सामाजिक भागीदारी, लगाव और दायित्व बोध में भी बढोत्तरी होगी.

अंग्रेजी का पूर्वग्रह गैर अंग्रेजी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के लिए सीखने की प्रक्रिया को अनुवादमूलक और सीखने के प्रति दृष्टिकोण को रटन और पुनरुत्पादन की ओर ले जाता है. सीखने वाले में मौलिकता, सृजनशीलता और आत्मनिर्भरता के भाव कमजोर पड़ते जाते हैं. यही नहीं भाषाई घन चक्कर में अर्थ का अनर्थ होता रहता है. अब हम धर्म को 'रेलीजन' और सेकुलरिज्म को 'धर्मनिरपेक्षता' के रूप में धड़ल्ले से प्रयोग में लाते हैं. ऐसे ही आत्मन 'सोल' हो जाता है. अपनी भाषा के माध्यम से संस्कृति के सौंदर्य का जो स्वाद मिलना संभव होता उससे वंचित हो कर हम कई दृष्टियों से विपन्न होते हैं. इसे ध्यान में रख कर नई शिक्षा नीति में भाषा के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हुए प्राथमिक स्तर पर मातृ भाषा को माध्यम रखने का निश्चय किया है. यह एक प्रशंसनीय निर्णय है. भारतीय भाषाओं के प्रति उदासीन दृष्टिकोण से सांस्कृतिक विस्मरण और अपनी पहचान खोने का भी खतरा बढ रहा है. दो तरह की दुनिया के बीच (एक अंग्रेजी वाली काल्पनिक और दूसरी अपने घर और पास पड़ोस वाली) संतुलन बनाना मुश्किल हो जाता है. साथ ही शैक्षिक विकास की दृष्टि से बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा यदि उनकी घर की भाषा या मातृभाषा में दी जाती है तो विषय में प्रवेश सरल और रुचिकर तो होगा ही वह संस्कृति को भी जीवंत रखेगा. उनकी सामाजिक भागीदारी, लगाव और दायित्व बोध में भी बढोत्तरी होगी. अपनी भाषा सीखते हुए और उस माध्यम से अन्य विषयों को सीखना सुखद होगा. मसलन सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण और इससे जुड़े विषयों में भारत से परिचय भारत की भाषा में निश्चित ही सरल होगा और सीखने के प्रति चाव पैदा करेगा. एक अध्ययन विषय के रूप में अंग्रेजी और अन्य भाषाओं को सीखने की व्यवस्था भिन्न प्रश्न है और विद्यार्थी की परिपक्वता के अनुसार इसकी व्यवस्था होनी चाहिए. स्कूल, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय सभी स्तरों पर भारतीय भाषाओं का अधिकाधिक उपयोग हित कर होगा. शिक्षा के परिसर भाषिक बहुलता के स्वागत के लिए तत्पर होने चाहिए. इसके लिए स्तरीय सामग्री को उपलब्ध कराना और सतत अद्यतन करते रहने की व्यवस्था आवश्यक होगी. इसे समयबद्ध ढंग से युद्ध स्तर पर करना होगा.

कहना न होगा कि सभी प्रकार की नौकरी और रोजगार में बिना किसी भेद भाव के भारतीय भाषाओं को स्थान देना आवश्यक है. अपनी भाषा के प्रयोग से ही स्वराज और स्वायत्तता का मार्ग प्रशस्त होगा. आत्मनिर्भर और समर्थ भारत के लिए यह प्रमुख आधार होगा.

ज्वलंत विषयों पर मीडिया की भूमिका

मीडिया को निष्पक्ष रूप से मुद्दों को उजागर करना चाहिए

मीडिया की समाज के प्रति, देश के प्रति बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है. यह एक ऐसा माध्यम है जो आम जनता की आवाज़ को बुलंद करने के साथ ही साथ शासन स्तर तक पहुंचाने की क्षमता रखता है. यह लोकतंत्र के शेष सभी स्तम्भों के क्रिया कलापों पर नज़र रखते हुए उन्हें भटकने से रोकता है. आज भी सारा मीडिया गैर जिम्मेदार नहीं है. इसमें स्वच्छ ईमानदार पत्रकार आज भी है.

बढ़ते चैनलों के साथ एक चैनल दूसरे का प्रतिस्पर्धी हो गया है. मीडिया को कमाई का ज़रिया बनाते हुए टीआरपी की होड़ में ये कार्यक्रम की गुणवत्ता में ध्यान नहीं देते. मास मीडिया और सोसल मीडिया पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रम कई बार गलत शिक्षा भी देते है.

मीडिया वालों को यह ध्यान में रखनाा चाहिए जो वो दिखा रहे हैं उसमें सच्चाई हो, झूठ या अफवाह को नहीं दिखाना चाहिए. सरकार को मीडिया पर पैनी नज़र रखनी चाहिए जिससे देश और समाज कुछ सीखे और आगे बढ़े. मीडिया को अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए खुद काम करना चाहिए. मीडिया को चाहिए कि वह समाज की वास्तविकता को देखते हुए निष्पक्ष रूप से सामाजिक मुद्दों को उजागर करें और समाज, देश को आगे बढ़ाये.

-लईक राजा,

छात्र-परास्नातक-समाज कार्य, इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मीडिया कर्मियों के ऊपर दबाब इनकी हत्याओं से समझ सकते है

मीडिया के प्रभाव का महत्व हम मीडिया कर्मियों के ऊपर पड़ने वाले दबाबों एवं इनकी हत्याओं के द्वारा समझ सकते है. गौरी लंकेश, जे.डे ये उन पत्रकारों के नाम है जिनकी हत्याएं कराई जा चुकी है.

निर्भया कांड, कठुआ व उन्नाव में हुए बलात्कार व हत्याकाण्ड की पोल खोलने से आईपीसी एक्ट में सेक्शन-४२ में परिवर्तन हुआ है. हालांकि वर्तमान समय में विश्वसनीयता में राजनीति व व्यापार के नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं. जैसे- ताज होटल-२६/११ का लाइव वीडियो दिखाना, आचार संहिता के बाद भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण प्रसारित करना.

मीडिया के सम्पूर्ण इतिहास को देखने, समझने और विचार करने के बाद यह प्रतीत होता है कि मीडिया समाज के विकास में आक्सीजन की भांति कार्य कर रहा है किन्तु एक चिन्ता का विषय भी उत्पन्न हो रहा है वह यह है कि इस विकास के प्राण वायु में मिलावट के संकट के बादल उत्पन्न हो रहे हैं जो कि इसके स्वास्थ्य पर एक प्राण घात भी हो सकता है. इसलिए हमें इस विषय पर भी विचार व सुधार कार्य की जरुरत है. **-दल प्रताप सिंह,**

छात्र-परास्नातक, समाज कार्य, इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, प्रयागराज

कुछ राजनेता अपने अंदाज में मीडिया को चलाना चाहते हैं.

मीडिया की समाज में काफी महत्वपूर्ण भूमिका है. मीडिया का काम समस्याओं को सामने लाने के साथ-साथ सरकार के कामकाज पर नजर रखना भी है, लेकिन पिछले कुछ वर्षो में मीडिया की कार्यप्रणाली और रूख पर सवाल उठने शुरु हो गए हैं. सवाल यह है कि क्या मीडिया बदल रहा है? इसमें दो राय नहीं है कि मीडिया के काम करने के तरीके और चरित्र में बहुत बदलाव आया है.

दरअसल, मीडिया पर आज जो सवाल उठ रहे हैं, उसके लिए शायद कुछ स्थितियां जिम्मेदार है. अगर मीडिया के दबाब में काम करने की बात पर विचार करें तो यह साफ होना अभी बाकी है कि आखिर वह दबाब किस तरह का है. कुछ राजनेता अपने अंदाज में मीडिया को चलाना चाहते हैं. अगर मीडिया उनके पक्ष में सकारात्मक खबरे दिखाता है तो उसे अच्छा कहते है और ऐसा नहीं होने पर मीडिया को कढघरे में खड़ा करने लगते हैं. आज मीडियाा के सामने अपनी विश्वसनीयता बचाने की बहुत बड़ी चुनौती है.

-पूर्णिमा तिवारी,

छात्रा, परास्नातक-हिन्दी, कृपालु महिला महाविद्यालय, कुण्डा, प्रतापगढ़, उ.प्र.

इस कालम के अंतर्गत प्रत्येक माह एक ज्वलंत मुद्दा देते हैं. दिए गये मुद्दे पर आपको अपने विचार 150—200 शब्दों में टाईप कर या लिखकर उसकी फोटो अगले माह की 30 तारिख तक ई-मेल आईडी vsnehsamaj@rediffmail.com या ह्वाट्सएप नंबर 9335155949 पर भेज सकते हैं. साथ में अपनी फोटो, नाम एवं पता भेजना न भूलें. सर्वोत्तम तीन विचारों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा. विषय में आज का मुद्दा अवश्य लिखे. लगातार तीन मुद्दो में चयनित होने पर सम्मान पत्र भी दिया जाएगा. इसमें कोई उम्र का बंधन नहीं है.

इस माह का मुद्दा जारी

ज्वलंत मुद्दों पर मीडिया की भूमिका......

सबसे ज्यादा सुपरहिट फिल्में देने वाले "ऋषि कपूर"

भारतीय सिनेमा संसार में कुछ ऐसे अभिनेता और अभिनेत्रियां हुई हैं जिन्होंने न सिर्फ फिल्मों को लोकप्रिय बनाया वरन उनकी हिट फिल्में आज भी घरों में टेलिविजन पर, कैसेटों में विवाह समारोहों व महफिलों में गाये व बजाये जाते हैं. राजेश कुमार, राजकपूर, जीतेन्द्र, अशोक कुमार, किशोर कुमार, ऋषि कपूर अभिनेता व मीना कुमारी, सुरैया, मधुबाला, जयाप्रदा, कामिनी कैथवास, रेखा, माला सिंहा, नूरान, आशा पारेख ऐसी अभिनेत्रियां रही हैं जिन्हें हम अमरता की श्रेणी में संगीत व अभिनय के द्वारा अमरता के रूप में दिख सकती है. इसी में हीरो ऋषि कपूर का नाम सबसे ऊपर इसलिये मानता हूं कि न सिर्फ अनेकों सुपरहिट फिल्में दी बल्कि अपने अभिनव से अभिनेत्रियों के साथ दर्शकों का दिल भी जीता. श्री 420 व मेरा नाम जोकर से गीतों के साथ फिल्म संसार में अभिनय व गीतों में उसका साथ देने वाली अभिनेत्री नीतू सिंह को नीतू कपूर बनाकर साथ ले आया जिसने बाद में रणवीर कपूर जैसा सुपर स्टार भी फिल्म संसार को दिया. मैं ऋषि कपूर से फिल्मों के सेट पर कई बार मिला. एक दो बार अन्तराष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिल्ली, बगलुरु में उनसे भेंट हुई. यह चाकलेटी हीरो सदैव मेरा थोड़ी ही देर में बच्चों में बड़प्पन दिखाकर दिल जीत लेता था. उनकी फिल्में मैंने लगभग सभी देखी है. लेकिन चांदनी, वाबी, कभी कभी, अमर अकबर एंथोनी, सरगम, कर्ज, नसीब, प्रेमरोग, कुंजी, सागर, नगीना, हीना, कुछ ऐसी उल्लेखनीय फिल्में रही जिन्हें आज भूल भी नहीं सकते.

67 वर्ष के इस शानदार अभिनेता की फिल्मों को अगर हम एक कड़ी में बांधने लगे तो आपने जीवन की सत्य घटनाओं का पता चल जायेगा. बाबी फिल्म व बाद में सागर फिल्म में उनके साथ अभिनेत्री डिंपल कपाड़िया

थी एवं बाबी जब फिल्म आई तो राजकपूर की हालत बहुत खस्ता थी. लेकिन ऋषि कपूर ने पिता की इज्जत संभाली. मैं जब के. विश्वनाथ के साथ जयप्रदा को इन्दौर सरगम के प्रीमियर में बुलवाया था, जयाप्रदा जिन्हें अंग्रेजी ही आती थी ने कहा मैं हिन्दी नहीं बोल सकती लेकिन ऋषिकपूर मुझे हिन्दी सीखा रहे हैं. उन्होंने व्यक्ति में एक पापुलर गीत उसी समय गाया था-"ढपली वाले ढपली बजा" वे फिल्म में गूंगी अभिनेत्री का अभिनय कर रही थी. बस यही कहें सुपरहिट फिल्में देने वाला हीरो मुस्कराता हुआ सबसे सलाम कर चला गया.

ऋषि कपूर की कुछ प्रमुख फिल्मोग्राफी-मेरा नाम जोकर, बाबी, रफूचक्कर, खेल खेल में, जिंदादिल, राज, कभी कभी, लैला मजनू, हम

-ब्रजभूषण चतुर्वेदी-बीबीसी

किसी से कम नहीं, दूसरा आदमी, अंजाने में, नया दौर, फूल खिले हैं गुलनाज, झूठा कहीं का, दुनिया मेरी जेब में, सरगम, धन दौलत, आपके दीवाने, कर्ज, दो प्रेमी, गुनाहगार, नसीब, कातिलों का कातिल, दीदार ए यार, प्रेम रोग, ये इश्क नहीं आसान, कुंजी, बड़े दिलवाला, तबायफ, सितमगर, सागर, नसीब अपना अपना, दोस्ती कीमती, नगीना, एक चादर मैली सी, हवालात, सिंदूर, प्यार के काबिल, घर घर की कहानी, हमारा खानदान, विजय, जनम जनम, राजा, हथियार, नकाब, बड़े घर की बेटी, परवरिश, चांदनी, खोज, अमीरी गरीबी, आजाद देश के गुलाम, शेषनाग, शेरदिल, घर परिवार, मजबूर, हीना, बंजारन, रंगभूमि, इंतेहा प्यार की, दीवाना, हनीमून, बोल राधा बोल, श्रीमान आशिक, दामिनी, साहिबा, इज्जत की रोटी, अनमोल, गुरूदेव, साजन का घर, पहला पहला प्यार, मोहब्बत की आरजू, ईना मीना डीका, प्रेमरोग, घर की इज्जत, साजन की बाहों में, हम दोनों, याराना, प्रेमग्रंथ, दरार सहित ऋषिकपूर ने 125 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया.

जन्म-बंबई, पिता-राजकपूर, मां-कृष्णा राजकपूर, पहली फिल्म-मेरा नाम जोकर, बतौर नायक पहली फिल्म -बॉबी, पहली नायिका-डिम्पल कापड़िया, खिलाड़ी-सुनील गावस्कर, पसंदीदा नायक-अमिताभ बच्चन, नाना पाटेकर, प्रिय नायिका-नीतूसिंह, माधुरी दीक्षित, प्रिय शहर-बंबई

निधन-29.04.2020, आयु-67वर्ष

धारावाहिक उपन्यास

"मुगल-ए-आजम की विरासत"

डॉ० अरुण कुमार आनन्द,
चन्दौसी, संभल उ०प्र०

भाग-3

उन दिनों बुरहानपुर रियासत का नवाब और रियासत दार हाकीम मीर खलील खाँ ही था जो शाहजहां का मौसा और वाजिद खां का रिस्ते में साढ़ू लगता था. दिल्ली दरबार से मारोमार कूच करकें हारी-थकी फौज कों आराम देनें के मकषद से बुरहानपुर किले में कैंप कर दिया गया था. देखते ही देखते किले के मैदानपर फौज के खेमें (तंबू) तन गये. बाजर भी लग गया मानो छोटा-मोटा शहर ही बस गया हों. शहरावत खाना बदौश कबीलों की बस्ती पास ही थी. इस बात की भनक मीना हुस्न ए शवाब को पहले ही लग चुकी थी किं वाजिद खाँ भी इसी फौजी कैप के किनही एक खेमे में है. मुहब्बत की आग बहुत बूरी होती है. वह अगर न बूझी तो हुस्न और इश्क दोनो को जला डालती है. उसे बेचैनी इस कदर हो रही थी कि वह अपने आशिक से तुरन्त मुलाकात करना ही चाहती थी, लेकिन कबीले के रस्मो-रिवाजों की बेड़ियां उसके कदम रोक रहे थे. दूसरे दिन सूरज उगने से पहले ही वह बकरिया खोल कर चुगाने के बहाने से जनाना बाग की तरफ निकल पड़ी. और उन दोनों की मुलाकाते बा दस्तूर जारी रही. यह बात शहरावत कबीले में पहूच चकी है.

बुरहानपुर से लगभग तीन बस्ता ढाई कोस दूर ताप्ती नदी के तट पर मीर खलील खां की हवेली है. हवेली भी भव्य किले की तरह धौलपुरी लाल पत्थरों से बना है, मीर खलील खां घंमडी मिजाज का नवाब था वह औरंगजेब गांजी को खास पसन्द नही करता था. वजीन वाजिद खाँ मजबूर भी था. रिस्तेदारी का तकाजा भी था ठहराने के लिए, क्यों कि बादशाह सलामत के हूकूम की उदूली नही कर सकता था. वजिद खाँ के आने की खबर आई तों शाही तरिके से उसकी खैरमकदम नवाजी और शाही आदर करने का इतंजाम करवा कर उससे बचने के लिए इलाके के दौरे पर निकल पड़ा-जिसका फयदा वाजिद को अपनी मुहब्बत को परवान चढ़ाने के लिए मिला वह और मीना शहरावत सुबह से शाम तक मुहब्बत की पीगें बढ़ाने में मगसूल हो गये यह शिल शिला कई दिनो तक चलता रहा. उसने तमाम फौजी लश्कर को गनी मौहम्मद कैरवी को सिपाह सालार बना कर सौराष्ट्र की तरफ मारवाडी और मराठा राजाओ से जंग करने के लिए रवाना कर दिया. औरंगजेब मराठा रियासतों कों मुगल सल्तनत में मिलाना चाहता था. जो बिना जंग के मुम्मकिन नही था. क्योंकि अब तक सौराष्ट्र मुगल सल्तनत से अलग था. शहरावत सम्प्रदाय भी मराठा से ही ताल्लुक रखते हैं. और कट्टर हिन्दू कौम हैं। वह मुगल कौम को पसन्द नही करते हैं. जब मीना शहरावत और वाजिद खांन के मुहब्बत के चर्चे शहरावत वंश के माराठाओं राजाओं कबीलों-बस्तियों में पहूंचा तों इलाकाए-मजहबी रसूकदारों में हड़कम्प मच गया. हूकूमत के खिलाफ बगावत का तूफान खड़ा हो गया मीना को घर से निकलने पर पाबंद कर दिया गया. मगर वाजिद खाँ यह सब नही चाहता था मीना को हासिल करने के लिए वह सौराष्ट के मराठा ताकत से टकराने को तैयार था. उसने बुरहानपुर में शहरावत जाति के लोगों का कत्ले आम शुरू करा दिया तो मराठा फौज जंग के लिए सामने खड़ी हो गई. और मुगल फौज और मराठा फौज में जबरदस्त जंग शुरू हो गया. सभी मराठा रियासते मुंगलो पर टूट पड़ी. यह जंग कई दिन तक जारी रहा. जब इस जबरदस्त जंग और वाजिद खां व दस्तुखे शराहवत की हूस्त ए बददूर मीना शहरावत के बे पनाह मुहब्बत पाक की खबर मुगल सल्तनत के बादशाह औरंगजेब आलमगीर गाजी तक पहूंची तों वह आग बबूला हो गया, फौरन बहरजार (दरबार का मुखिया) को बुलाकर दोनो को दिवाने आम में अपने सामने पेस करने का हूकूम दे डाला.

> **आपने बिना इजाज्त बाग़ में आकर आम तोड़ने का गुनाह किया है, मुगल सल्तनत में गुनाह करने वालों को बकसा नही जाता, यह हमारा वसूल है. आपके इस खूबसूरत गुनाह से हमारा दिल बाग़ बाग़ है.**

दरबार के दरोगा ने फौरन हूकूम की तामीर करते हुयें मीना शहराबत को गिरफतार कर लिया उसके बाजूओं और पैरों कों कादीयों (जंजीर की बड़ियो) से जकड़ कर शाही कैद खाने में डाल दिया गया. उधर वाजिद खाँ

कों फौरन दरबार ए दिवाने आम में बादशाह सलामत के सामने पेस होने का फरमान बुरहानपुर जारी कर दिया गया था, बहरजार ने बुरहानपुर जाकर सारा बाकया वाजिद खां को बताया और उसे साथ लेकर वापस लौटा. अगले ही दिन दोनों आशिक और मासुक कों बादशाह औरंगजेब के सामने भरे दरबार में पेस किया गया है.
औरंगजेब-''हिन्दूस्तान के वफादार सल्तनत-ए-ताज की उस वे जाहिल लौड़ी के लिए सल्तनत की इज्जत गिरवी रखते तूमहें शर्म नही आया, वजीर-ए-आजम वाहिद खां?'' (बादशाह गुस्से में कड़ककर बोला-मानो उसे उसी वक्त चीर-फाड़ देना चाहता है.
वाजिद खां- ''यह हमारा नीजी मामला है, इसमें सल्तनत की इज्जत का क्या ताल्लूक जहां पनाह! थ्कसी लड़की से दिलो रहमत हो जाना कोई गुनाह तो नही है, ऐसा पीछे मुगल हूकूमत में पहले भी कई बार हो चुका है, आली जहां, तवारिख गवाह है, अगर मुहब्बत को गुनाह माना जाता है, तो शाहंशाहां शहाजहां के उस ताज महल को गिरदिया जाना चाहिए. जिसे मुहब्बत की याद में सलीम शांहजहां सुल्तान साहब ने तामीर करवाया था।'' (तलवार के मुठपर हाथ रख तहस में)
औरंगजेब- ''मगर तुम जानते हों वाजिद मुगल मजहब में हिन्दू खानाबदोश लड़की से ताल्लुक रखना वाजिब नही है, वह लड़की ऐ शहरावत कौम की कनीज है, मुगल दरबार में शहरावत कौम कों नौकरो गुलामों का खिदमद गार रखा जाता है, क्या उससे ताल्लूक मुगल कौम की तौहिन नही है खास कर शाही वजीर के लिए?

क्रमशः....

क्या आप लिखते हैं ?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4.विमोचन की व्यवस्था
5. ऑन लाईन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011
ई–मेल: sahityaseva@rediffmail.com

जो आपकी हर बात का यकीन करता है, उससे कभी झूठ मत बोलना।

–दाउजी

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

आदिकालीन साहित्य के अध्ययन की समस्याएं

'हिंदी साहित्य का विवेचन करने में यह ध्यान रखना होगा कि किसी विशेष समय में लोगों में रुचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ. आदिकाल का समय 1050 से 1375 प्रामाणिक माना जाता है. मिश्र बंधुओं ने ईसवी सन 643 से 1387 तक के काल को आरंभिक काल कहा है यह एक सामान्य नाम है और इसमें किसी प्रति को आधार नहीं बनाया गया है या नाम भी विद्वानों ने स्वीकार नहीं किया है.

-डा **पूर्णिमा मालवीय,** प्राचार्या,
डिग्री कालेज, प्रयागराज,उ.प्र.

प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संकेत प्रतिबिंब होता है. आदि से अंत तक इन्हीं चित्र व्यक्तियों की परंपरा को रखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है इस दृष्टि से हिंदी साहित्य का विवेचन करने में यह बात ध्यान में रखनी होगी कि किसी विशेष समय में लोगों में रुचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ. पिछले लगभग हजार बारह सौ वर्षो से जब से भारतीय समाज का परिचय इतिहास लेखन की उन परंपराओं से हुआ है जो अन्य देशों में प्रचलित रही हैं भारतीय समाज इस कशमकश का असर महसूस करता आ रहा है इतिहास लेखन इतिहास बोध और इतिहास दृष्टि जैसा कि हम आज इन्हें जानते हैं भारतीय समाज की मूल प्रवृत्ति न होकर बाहर से यहां लाई गई है एक आयातित विनमीना है पहले तुर्की अरबी और मध्य पूर्व से आने वाले अन्य समुदायों द्वारा और फिर आधुनिक काल में अंग्रेजी फ्रांसीसी यों और अन्य यूरोपीय समुदायों द्वारा प्राकृत की अंतिम अवस्था से ही हिंदी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है अब हम आते हैं आदिकाल पर आदिकाल का समय 1050 से 1375 प्रामाणिक माना जाता है यह नाम भी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा रखा गया था इसके अतिरिक्त डाक्टर ग्रियर्सन ने चारा काल मिश्र बंधुओं ने आरंभिक काल आचार्य शुक्ल जी ने वीरगाथा काल राहुल सांकृत्यायन ने सिद्ध सामंत काल महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने बीज व पनकाल श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने वीरगाथा काल तथा डा रामकुमार वर्मा जी ने चार अकाल यस अंधकार नाम से कहकर विभूषित किया है जिसमें आदिकाल ही अधिक समीचीन और सार्थक प्रतीत होता है आप समझिए जिसके नाम से इतना विसंगतियां दृष्टिगत होती हैं उसके अध्ययन में भी हमें अनेकों समस्याएं पर लक्षित लिखती हैं जिनकी हम आगे विस्तार से चर्चा कर रहे हैं आदिकाल नाम से उस व्यापक पृष्ठभूमि का बांध होता है जिस पर परवर्ती साहित्य खड़ा है भाषा की दृष्टि से इस काल के साहित्य में हिंदी के प्रारंभिक रूप का पता चलता है तो भाव की दृष्टि से भक्ति काल से लेकर आधुनिक काल तक की सभी प्रमुख व्यक्तियों के आदिम बीच आदिकाल में खोजे जा सकते हैं आदिकाल की रचना शैलियों के मुख्य रूप इसके बाद के सालों में मिलते दिखाई देते हैं आदिकाल की आध्यात्मिक श्रृंगारिक तथा वीरता की प्रवृत्तियों का ही विकसित रूप परवर्ती साहित्य में मिलता है.

आदिकाल साहित्य को पढ़ने में आई समस्याओं को जानने के लिए हम कुछ कवियों साहित्यकारों का उल्लेख करेंगे तथा विस्तृत चर्चा करेंगे जिसमें सर्वप्रथम आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी आदिकाल की एस प्रमाणिकता पर मोहर लगाई है उनके अनुसार आदिकाल की इस दिन परंपरा के बीच प्रथम दिल से वर्ष के भीतर तो रचना की किसी विशेष प्रवृत्ति का निश्चय नहीं होता धर्म नीति सिंगार वीर सब प्रकार की रचनाएं दोहों में मिलती हैं इस अ निर्दिष्ट लोग प्रवृत्ति के उपरांत जब से मुसलमानों की चढ़ाई यों का आरंभ होता है तब से हम हिंदी साहित्य की प्रवृत्ति एक

विशेष रूप से बनती हुई पाते हैं राष्ट्रीय कवि अपने आशय दाता राजाओं के पराक्रम पूर्ण चरितों या गाथाओं का वर्णन करते हैं यही प्रबंध परंपरा रासो के नाम से पाई जाती थी जिसे लक्ष्य करके इस काल को वीरगाथा काल कहा गया है इसके मुख्यतः तीन कारण है प्रथम इस साल की प्रधान प्रवृत्ति वीरता की थी अर्थात वीरगाथात्मक ग्रंथों की प्रधानता रही है दूसरा अन्य जो ग्रंथ प्राप्त होते हैं वे जैन धर्म से संबंध रखते हैं जो नाम मात्र हैं तीसरा इस काल के फुटकर दोहे प्राप्त होते हैं जो साहित्यिक हैं तथा विभिन्न विषयों से संबंधित हैं किंतु उसके आधार पर भी इस काल की कोई विशेष प्रति निर्धारित नहीं होती है. शुक्ल जी ने इस साल की 12 रचनाओं का उल्लेख किया है जो निम्न वत हैं विजयपाल रासो हमीर रासो कीर्ति लता कीर्ति पताका खुमान रासो बीसलदेव रासो पृथ्वीराज रासो जय मयंक जस चंद्रिका जय चंद्रप्रकाश परमाल रासो अमीर खुसरो की पहेलियां विद्यापति की पदावली आचार्य शुक्ल जी द्वारा निर्धारित किए गए वीरगाथा काल नामकरण के संबंध में भी कई विद्वानों ने विरोध प्रकट किया है इनमें श्री मोतीलाल मैनरिया एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि मुख्य हैं जिसमें आचार्य द्विवेदी जी का मानना है कि वीरगाथा काल की महत्वपूर्ण रचना पृथ्वीराज रासो की रचना उस काल में नहीं हुई थी और यह एक अर्थ प्रमाणिक रचना है यही नहीं शुक्ल जी ने जिन ग्रंथों के आधार पर इस काल का नामकरण किया है उनमें से कई रचनाओं का वीरता से कोई संबंध नहीं है.

बीसलदेव रासो गीत रचना है जय चंद्र प्रकाश तथा जय मयंक जस चंद्रिका इन दोनों का वीरता से कोई संबंध नहीं है यह ग्रंथ मात्र सूचना भर हैं अमीर खुसरो की पहेलियां का भी वीर्य से कोई संबंध नहीं है विजयपाल रासो का समय मिश्र बंधुओं ने संवत 1355 माना है. अतः इसका भी वीरता से कोई संबंध नहीं है. परमाल रासो पृथ्वीराज रासो की तरह अर्थ प्रमाणिक रचना है तथा इस ग्रंथ का मूल रूप प्राप्त नहीं है.

कीर्ति लता तथा कीर्ति पताका इन दोनों ग्रंथों की रचना विद्यापति ने अपने आशय दाता राजा कीर्ति सिंह की कीर्ति के गुणगान के लिए लिखे थे उनका वीर्य से कोई संबंध नहीं है. विद्यापति की पदावली का विषय राधा तथा अन्य गोपियों से कृष्ण की प्रेम लीला है. इस प्रकार शुक्ल जी ने जिन आधार पर इस काल का नामकरण वीरगाथा काल किया है वह योग्य नहीं है.

अब हम डाक्टर ग्रियर्सन के मंतव्य पर विचार करते हैं डाक्टर ग्रियर्सन ने हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम काल को चारण काल नाम दिया है उनके अनुसार हिंदी साहित्य इतिहास का प्रारंभ 643 ईसवी से माना है किंतु उस समय की किसी चारण रचना या प्रवषत्ति का उल्लेख उन्होंने नहीं किया है वस्तुतः इस प्रकार की रचनाएं 1000 ईसवी सन तक मिलती ही नहीं है इसलिए डाक्टर ग्रियर्सन द्वारा दिया गया नाम योग्य नहीं है.

मिश्र बंधुओं ने ईसवी सन 643 से 1387 तक के काल को आरंभिक काल कहा है यह एक सामान्य नाम है और इसमें किसी प्रति को आधार नहीं बनाया गया है या नाम भी विद्वानों ने स्वीकार नहीं किया है.

डा. रामकुमार वर्मा जी ने आदिकाल को दो भागों में विभक्त किया है संधि काल और चारण काल जिसमें संधि काल भाषा की ओर संकेत करता है और 4 अकाल एक वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करता है इन्होंने हिंदी साहित्य के प्रारंभिक काल को चारण काल का नाम दिया है इस नामकरण के बारे में उनका कहना है कि इस साल के सभी कवि चारण थे इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि सभी कवि राजाओं के दरबार आश्रम में रहने वाले उनके यशोगान करने वाले थे उनके द्वारा रचा साहित्य चारणी कहलाता है किंतु विद्वानों का मानना है कि जिन रचनाओं का उल्लेख वर्मा जी ने किया है उनमें अनेक रचनाएं संदिग्ध दिखाई देती हैं कुछ तो आधुनिक काल की भी है इस कारण डाक्टर वर्मा जी द्वारा दिया गया चारण काल विद्वानों ने अमान्य घोषित कर दिया है.

अब हम राहुल सांकृत्यायन को लेते हैं उनके अनुसार आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक के काल को सिद्ध सामंत यू की रचनाएं माना गया है उनके मतानुसार उस समय के काव्य में दो प्रवृत्तियों की प्रमुखता मिलती है पहला सिद्धू की वाणी जिसके अंतर्गत पौधों तथा सिद्धू नाथों की तथा जैन मुनियों के उपदेश मुल्क तथा हठयोग की क्रिया का विस्तार से प्रचार करने वाली रहस्य मुल्क रचनाएं आती हैं और दूसरा सामंतों की स्तुति इसके अंतर्गत चारण कवियों के चरित काव्य रासो ग्रंथ आते हैं जिनमें कवियों ने अपने आपसे दाता राजा एवं सामा तो इसके लिए युद्ध विवाह आदि के प्रसंगों का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया है इन ग्रंथों में भी रक्त का नवीन स्वर मुखरित शेष

पृष्ठ 25 पर...

कहानी

कबीर

एक दिन कुछ आवश्यक काम के कारण मुझे स्कूल में बहुत देर हो गई. कोई वाहन उस वक्त उपलब्ध नहीं था. अतः मैं कॉलेज से घर की ओर पगडंडी के रास्ते पैदल ही चल पड़ा. तभी चलते-चलते मेरी नजर पगडंडी के बीचों बीच सफेद कपड़े में लिपटे हुए एक शिशु पर पड़ी. देखकर कुछ चौंका.

-सनातन कुमार वाजपेयी,
जबलपुर, म.प्र.

भारत विभाजन के समय आज के पाकिस्तान से आते वक्त, एक हिंसक भीड़ से बचने की कोशिश और भगदड़ में हमारा पाँच साल का इकलौता बच्चा लाहौर में खो गया था. काफी ढूंढने पर भी नहीं मिल सका. बड़े दुखी बोझिल मन से हमें भारत आने को मजबूर होना पड़ा.

अपने बच्चे के, खो जाने के सदमे, को, मेरी पत्नी बर्दाश्त नहीं कर सकी और बीमार रहनी लगी.

भारत में आकर मैं एक शहर के शासकीय कालेज में प्रिंसिपल हो गया. शहर बहुत बड़ा नहीं था. कालेज भी एक ही था. इसलिए वहाँ मेरा बड़ा मान-सम्मान था. मैं अपनी धर्म-पत्नी के साथ एक किराये के मकान में रहने लगा.

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही शहर में बराबर संख्या में रहते थे. उन सभी से इतना अधिक मान-सम्मान पाकर हमारा दुख कुछ कम अवश्य हो गया था किन्तु मेरी पत्नी अपने बच्चे खोने के सदमें से पूरी तरह निकल नहीं सकी.

एक दिन कुछ आवश्यक काम के कारण मुझे स्कूल में बहुत देर हो गई. लगभग आधी रात हो गई थी. कोई वाहन उस वक्त उपलब्ध नहीं था. अतः मैं कॉलेज से घर की ओर पगडंडी के रास्ते से पैदल ही चल पड़ा. रास्ते में एक कब्रिस्तान पड़ता था. जिसमें से होकर मैं, दिन के समय में कई बार आया जाया करता था. पूर्णिमा की रात थी. चाँदनी सब जगह बिखर रही थी. मैं कब्रिस्तान के बीच में पहुँच चुका था. सब ओर सन्नाटा ही सन्नाटा था. चारों ओर पेड़, झाड़ियाँ, कब्रे, लोभान की गंध, सियारों की 'हुआ-हुआ' और चाँदनी. अजीब दृश्य था. तभी चलते-चलते मेरी नजर पगडंडी के बीचों बीच सफेद कपड़े में लिपटे हुए एक शिशु पर पड़ी. देखकर कुछ चौंका. कुछ भय जैसा लगा. इधर -उधर दूर तक देखा कि उस शिशु को लाने वाला कोई आदमी या औरत दिख जाये लेकिन दूर-दूर तक कोई नहीं दिखा. हिम्मत जुटाकर बच्चे के पास पहुंचा. बच्चे की नब्ज़ देखी. जीवित था लेकिन आश्चर्य यह था कि बच्चा रो नहीं रहा थ. मेरे हाथ का स्पर्श पाकर वह मुस्कुराने लगा. भूत-प्रेत पर तो मैं विश्वास करता नहीं फिर भी एक अज्ञात से भय को मैं अपने अन्दर अनुभव करने लगा. मेरा मन पीपल के पत्ते जैसा डोलने लगा. कभी कहता, ''बच्चा जिन्दा है. क्या तुम इसे यूं ही कब्रिस्तान में अकेला छोड़कर चले जाओगे? क्या स्कूल कालेज में दया परोपकार की शिक्षा झूठ मूठ ही बच्चों को पढ़ाते हो? उठा लो इसे और कलेजे से लगा लो. यह भी किसी इंसान की ही औलाद है. माँ-बाप का पता लगा लेना और दे देना.'' फिर दूसरा मन कहता, ''क्यों पचड़े में पड़ते हो. सोच लो तुमने देखा ही नहीं. चले चलो पगडंडी पर रूक क्यों गए?'' इसी तरह बड़ी ऊहापोह के बाद मेरी आत्मा ने मुझे आवाज दी, ''तेरा बच्चा, मेरा बच्चा. बच्चा तो भगवान का रूप होता है. न वह जाति जानता, न पाँति. उठाले इसे, वरना ईश्वर को क्या जवाब देगा, और मैंने बच्चे को उठा लिया. हाथों में लेकर कहा, ''बेटा, ले तो मैं तुझे अभी चलता अपने साथ, लेकिन पता नहीं, तुम किस जाति के हो.'' इतना कहना था कि बच्चा बुरी तरह रोने लगा, गोया'' शब्द से उसे बड़ी तकलीफ पहुँची हो.

मैंने पूछा, ''हिन्दू से हो?'' वह और ज़ोर से रोने लगा. मैंने कहा, ''मुसलमान से?'' वह मेरे हाथों से फिसलने लगा. मैंने कहा ''इस शहर में दो ही तो कौमें रहती हैं. हिन्दू से नहीं हो, मुसलमान से नहीं हो, फिर किससे पैदा हों?'' वह मेरे हाथों से फिसलकर मिट्टी में जा गिरा और हँसने लगा. मानो कह रहा हो, ''हिन्दू से नहीं, मुसलमान से नहीं, मिट्टी से पैदा हुआ हूँ. बोलों?'' मैंने उसे उठाया और घर ले आया. कुछ दिन तक मैंने और पत्नी ने बहुत पता लगाया लेकिन कोई भी उसे अपना

कहने को तैयार नहीं हुआ.
मैंने पत्नी को समझाया ''चलो चलकर अनाथालय में इसे दे आयें.''
सुनकर वह रोने लगी. बोली मुझ से यह नहीं हो सकेगा. फिर मैं ही इसे क्यों न पाल पोष कर बड़ा करूँ. मुझे इसमें अपने बच्चे की सूरत दिखाई देती है.
अब उस बच्चे को हमने अपने ही पास रख लिया. चूंकि बच्चा रास्ते में पड़ा मिला था इसलिए उसका नाम 'कबीर' रख दिया. कबीर को पाकर मेरी धर्म-पत्नी बड़ी खुश थी.
कुछ दिन बाद मकान मालिक ने आकर कहा, ''सर मकान खाली कर दें तो बड़ी मेहरबानी होगी.'' मैंने पूछा, ''मकान खाली कर दूं? क्यों? क्या मैं किराया समय पर नहीं देता या तुम्हारे मकान की दीवालें गिर रहा हूँ? क्या बात है साफ-साफ कहो.''
बड़ी मुश्किल से उसने बताया, ''सर अब आपसे क्या छुपाना. आप इस मकान में कई सालों से रहते आ रहे हैं. मुझे कोई शिकायत नहीं. लेकिन क्या करूँ मोहल्ले वालों का दबाव है.''
मैंने पूछा, ''मुहल्ले वालों का दबाव? अखिर क्यों?''
''वो साब, कब्रिस्तान से आप बच्चा उठा लाये. न आपने जात देखी न पाँत. मुहल्ले वाले पूछ रहे हैं. आप किसी मुसलमान का बच्चा तो नहीं ले आए? अगर ऐसा है तो मकान खाली करके कहीं दूसरे मुहल्ले में चले जायें.''
मैंने कहा, ''और नहीं गया तो?''
तभी कुछ लोग आये और कहने लगे, ''नहीं जायेंगे तो हम आपके बच्चे को छुड़ाकर फिर वहीं छोड़ आयेंगे. कब तक बच्चे की रखवाली करोगे? देखते हैं हम भी.''
सुनकर मेरी पत्नी थर-थर काँपने लगी. आकर बोली, ''भाइयों, हमें कुछ वक्त सोचने के लिए दे दीजिए.''
भीड़ ने कहा, ''ठीक है. हम... तीन दिन बाद फिर आयेंगे. सोचकर रखना.''
भीड़ के चले जाने के बाद मेरी पत्नी ने कहा, ''चलो हम किसी मुसलमानी मुहल्ले में घर ढूँढ लें.'' मैंने कहा, ''अब शाम हो गई है कल चलेंगे.''
दूसरे दिन सुबह मैं बेड-टी लेते हुए ताज़ा अखबार पढ़ रहा था. मेरी नजर अखबार की मोटी-मोटी लाइनों पर अटक गई जिनमें लिखा था-
''हमारे शहर के कालेज के प्रिंसिपल महोदय को एक नवजात शिशु कब्रिस्तान में पड़ा मिला है. बच्चे के माता-पिता या जाति-पाँति का कोई पता नहीं चल पा रहा है. विश्वसत सूत्रों से ज्ञात हुआ कि प्रिंसिपल महोदय को उनकी जाति वालों ने जाति से निकाल दिया है और उन्हें मोहल्ला छोड़कर जाने को मजबूर कर दिया है. हम प्रिंसिपल जी के साहस की प्रशंसा करते हैं.''
अखबार की इस खबर ने आग में घी का काम किया. मोहल्ले की भीड़ आने ही वाली है यह सूचना पाकर हम तुरन्त घर में ताला डालकर एक मुसलमानी मोहल्ले में मकान ढूढने निकल पड़े.
शहर के हिन्दु और मुसलमान, सभी लोग मुझे अच्छी तरह जानते थे किन्तु मैं उस वक्त जिस रास्ते से गुजरता, लोग मुझे देखकर अपने घर के अन्दर भाग जाते, मुँह फेर लेते. मुसलमानी मोहल्ले में भी मुझे कोई भी अपना मकान किराये पर देने को राज़ी नहीं हुआ. निराश होकर हम लौटने ही वाले थे कि एक बुढ़िया हमें एक घर के सामने बैठी हुई दिख. मैं और पत्नी कबीर की गोदी में लिए उस बुढ़िया के पास पहुँचे. बात करने पर बुढ़िया ने बताया कि वह पढ़ी लिखी नहीं है. मकान उसका ही है. उसके पति की काफी समय पहले मृत्यु हो चुकी है तथा दो वक्त की रोटी का भी कोई साधन नहीं है. हमने मकान किराये पर मांगा तो वह झट से राज़ी हो गई और कमरा दिखाने लगी. कहने लगी, ''बेटा, अकेले में यह घर काटने को दौड़ता है. दो वक्त की रोटी नहीं मिल पाती है. कभी-कभी तो तुझे भूखा ही रहना पड़ता है. बुढ़ापे के कारण कहीं काम पर भी नहीं जा सकती. खुदा ने मुझ पर रहम करके तुम्हें भेजा है. अब किराये के पैसों से दो वक्त की रोटी तो नसीब हो जायेगी. ये कमरा देखो- तुम्हारे लिए.'' तभी उस मोहल्ले की भीड़ आ गई. शोरगुल सुनकर बुढ़िया और हम लोग बाहर आए. मैंने देखा -भीड़ में वे ही सब लोग थे जिन्हें मैंने पढ़ाया था और जो अब कोई नौकरी या काम-धंधा कर रहे थे. मुझे देखते ही उन्होंने नजरें नीचे झुका लीं, तभी हिम्मत करके एक आदमी ने ज़ोर से कहा, ''बुढ़िया तू इन्हें मकान नहीं दे सकती.''
बुढ़िया ने हकलाते हुए कहा, ''क्यों! ये मकान मेरा है? इन्हें क्यों न किराये पर दूँ. मैं भूखी मर जाऊँ मगर किराये पर मकान न दूं, यही चाहते हो न? क्यों''
आदमी ने कहा, ''ये जो बच्चा तू देख रही है इनके पास, वो इनका नहीं है. किसी की लावारिस औलाद है. कहीं से उठा लाए. पूछ ले तू ही खुद.''
बुढ़िया ने कहा, ''बच्चा उठा लाए, तो थाने में चले जाओ, इनकी रिपोर्ट कर

दो. मुझे मकान देने से क्यों रोक रहे हो.''

अब सबके सिर गुस्से में ऊँचे थे. भीड़ ने कहा, ''अगर तू इन्हें मकान देने से साफ-साफ इंकार कर दिया.

घर लौटते समय मेरी पत्नी ने कहा, ''आपके रिटायरमेंट को अब केवल एक ही महीना तो रह गया है. क्यों न हम उसी कब्रिस्तान के किनारे, एक छोटा सा कच्चा मकान बना ले?''

मैंने कहा, ''भगवान, कब्रिस्तान के नाम से ही बड़े-बड़े लोग डर जाते हैं और तुम उसमें रहने की बात कर रही हो. तुम्हे डर नहीं लगेगा क्या?''

उसने कहा, ''नहीं जी. डर काहे का? जब मेरा नन्हा सा कबीर नहीं डरा तो मैं क्यों डरूंगी और फिर एक ही महीने की तो बात है. किसी तरह समय काट लूंगी.''

एक महीने के बाद जब तुम रिटायर हो जाओगे तो कबीर को लेकर हम किसी ऐसे शहर में चले जायेंगे जहां हमें कोई पहचानता न हो. वहाँ मैं अपने कबीर को पढ़ा-लिखा कर खूब बड़ा आदमी बनाऊँगी.

सुनकर मुझे मन में ऐसा लगा मानो यह कबीर सचमुच में पूर्वजन्म का अपढ़ कबीर ही रहा होगा और मेरी पत्नी उसकी पूर्वजन्म की मा. पूर्वजन्म के कबीर, पढ़ने की इच्छा लेकर स्वर्गवासी हुए होंगे और उसकी माँ पढ़ाने की. अब इस जन्म में दोनों मिल गए हैं.

कब्रिसतान के किनारे हमारा एक छोटा सा कच्चा मकान बनकर तैयार था. कबीर अब हमारे साथ कब्रिस्तान में ही रहता है जहां भूतों और जिन्नों के डर से न तो हिन्दू आते हैं और न मुसलमान.

आदिकालीन साहित्य के अध्ययन...शेष पृष्ठ 22 का..

हुआ है राहुल जी का यह मत भी अमान्य है क्योंकि इस नामकरण से अलौकिक राम का उल्लेख करने वाली किसी विशेष रचना का प्रमाण नहीं मिलता नाथ पंथी रचना हठयोगी कवियों तथा खुसरो आदि की काव्य प्रवृत्तियों का इस नाम में समावेश नहीं होता है

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार हिंदी साहित्य के प्रथम काल का नाम बीज्ब अपन काल रखा उनका यह नाम योग्य नहीं है क्योंकि साहित्यिक प्रवृत्तियों की दृष्टि से या काल आदिकाल नहीं है यह काल तो पूर्वर्ती परिनिष्ठित अपभ्रंष की साहित्यिक कृतियों का विकास है

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार हिंदी साहित्य का इतिहास प्रारंभिक काल को आदि काल नाम दिया है विद्वान भी इस नाम को अधिक उपयुक्त मानते हैं इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है वह षुद्ध हिंदी का आदिकाल षब्द एक प्रकार की भ्रामक धारणा की सृश्टि करता है और ष्वोता के चित्र में यह भाव पैदा करता है कि यह काल कोई आदमी मनोभाव आपन परंपरा विनर मुक्त काव्य रूढ़ियों से अछूते साहित्य का काल है यह ठीक नहीं है यह काल बहुत अधि ाक परंपरा प्रेमी रूढ़ ग्रस्त सजग और सचेत कवियों का काल है आदिकाल नाम ही अधिक योग्य है क्योंकि साहित्य की दृश्टि से यह काल अपभ्रंष का विकास है पर भाशा की दृश्टि से यह परिनिश्ठित अपभ्रंष से आगे बढ़ी हुई भाशा की सूचना देता है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के आदिकाल के लक्षण निरूपण के लिए निम्नलिखित पुस्तकें आधारभूत बताई हैं पहला पृथ्वीराज रासो दूसरा परमाल रासो तीसरा विद्यापति की पदावली या चौथा कीर्ति लता पांचवा कीर्ति पताका छटा संदेष रासक सातवा परमात्मा प्रकाष बौद्ध दान और दोहा स्वयंभू छंद और प्राकृत बलम इस प्रकार हिंदी साहित्य का इतिहास के प्रथम काल के नामकरण के रूप में आदिकाल नाम ही योग्य और सार्थक भी है हम यह कह सकते हैं कि आदिकाल बहुत ही समृद्ध साहित्य है हिंदी साहित्य के आदिकाल का अवलोकन करने पर विभिन्न समस्याओं के झंझावात को पार करते हुए यही ज्ञात हुआ कि साहित्य की काव्य सरिता मंद पड़ी किंतु अबाध ा गति से सतत प्रवाहित होती रही।

संदर्भ ग्रंथ सूची: हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य शुक्ल, माध्यम जुलाई से सितंबर, आधुनिक हिंदी-डा. भागीरथ मिश्र, साहित्य भारती, लखनऊ, हिंदी साहित्य का इतिहास-डा. नगेन्द्र, सम्मेलन पत्रिका

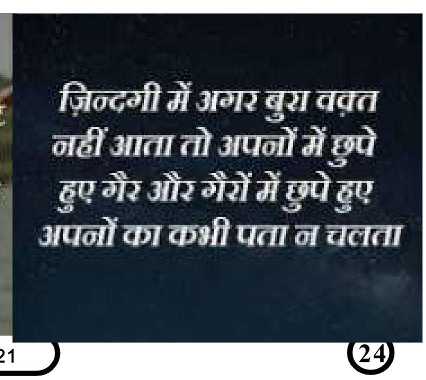

लघु कथाएं

पकड़

बादल बरस-बरस कर थम गये थे, भादो खत्म होने को थी. कुसुमप्यारी अपने झोपड़े को लीप-पोत रही थी. उसका खसम (पति) नीम के पेड़ के नीचे टूटी खटिया पर पड़ा-पड़ा खाँस रहा था. कुसुमप्यारी के ब्याह को अभी मुश्किल से पूरे तीन वरस भी नहीं हुए थे. बेचारी का पति चमनू भट्ठे पर ईंटों का काम करते-करते कब बीमार हो गया, पता ही नहीं चला. सरकारी डाक्टर ने बताया कि उसको टी. वी. हो गया है.

कुसुमप्यारी जल्दी-जल्दी हाथ चला रही थी ताकि घर की लिपाई-पुताई जल्दी से पूरी हो जाये, वैसे भी अब भट्ठे खुलने ही वाले हैं. जब भट्ठे खुल जायेंगे फिर उसे घर के काम की फुर्सत कहाँ मिलेगी. तभी पीछे से कुसुमप्यारी को एक मजबूत पकड़ने कसकर जकड़ लिया. कुसुमप्यारी समझ गई कि यह पकड़ ठेकेदार की ही है. पिछले सालभर से वो इस पकड़ को सहती आ रही थी.

'पूरे तीन महीने हो गये, तुझे बाँहों में भरे हुए. सुन! कल भट्ठे का शुभ मुहूर्त है, काम पर आ जान.' इतना कहते हुये ठेकेदार पदमसिंह ने कुसुमप्यारी की पकड़ ढ़ीली कर दी. कुसुमप्यारी हाँ में सिर हिलाती हुई, नजरें झुकाये झोपड़े से बाहर निकल गई और ठेकेदार अपनी बुलेट मोटर साइकल फट्ट-फट्ट करता हुआ हवा हो गया.

-**मुकेश कुमार ऋषि वर्मा,** फतेहाबाद, आगरा, उ.प्र.

लोकतंत्र

झुंड के झुंड लोग गाँव के स्कूल की ओर जा रहे थे. एक बच्चे ने माँ से पूछा कि माँ ये सब लोग कहाँ जा रहे हैं? माँ ने बताया कि ये सब लोग वोट डालने जा रहे है. ''वोट डालने से क्या होगा माँ?'' बच्चे ने पूछा. माँ ने कहा कि वोट डालने से मुखिया का चुनाव होगा. जब बच्चे ने पूछा कि माँ हर बार इन्हीं को मुखिया चुनने के लिए वोट क्यों डालते हैं तो माँ ने कहा कि मुझे नहीं पता. कुछ देर के बाद बच्चे ने माँ से फिर पूछा, ''माँ ये जो हमारे गाँव के मुखिया हैं इनकी मौत के बाद गाँव का मुखिया कौन बनेगा?'' माँ ने कहा कि सीधी सी बात है कि मुखिया की मौत के बाद उसका बेटा मुखिया बनेगा. बच्चे ने इसके बाद फिर पूछा, ''मुखिया के बेटे की मौत के बाद फिर मुखिया कौन बनेगा?'' माँ ने तनिक झुंझलाते हुए कहा, ''अरे सभी जानते हैं उसकी मौत के बाद उसका बेटा मुखिया बनेगा. ''यदि उसकी भी मौत हो गई तो फिर मुखिया कौन बनेगा?'' बच्चे ने एक बार फिर जिज्ञासा व्यक्त की. माँ ने इस बार बच्चे को थोड़ा समझाने के लहजे में कहा, ''उसके बाद कोई भी मुखिया बने पर एक बात ध्यान से सुन ले कि तेरा नंबर कहीं नहीं है.'' जब मुखिया का बेटा ही अगला मुखिया बनना है तो ये वोट क्यों डाले जाते हैं?'' बच्चे ने अगला सवाल दाग दिया. इस बार माँ चुप थी क्योंकि इस प्रश्न का कोई उत्तर सचमुच उसके पास नहीं था. पास ही खड़े एक समझदार व्यक्ति ने जो माँ-बेटे की बातचीत सुन रहा था बच्चे को अपने पास बुलाया और कहा, ''बच्चे हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है इसलिए हर मुखिया का चुनाव लोगों के वोटों द्वारा ही किया जाता है. महत्त्वपूर्ण ये नहीं कि कौन मुखिया बनता है बल्कि महत्त्वपूर्ण ये है कि मुखिया का चुनाव कैसे किया जाता है. यदि वोट नहीं डालेंगे तो प्रजातंत्र का अर्थ ही क्या रह जाएगा?'' बच्चे ने इतना ही कहा, ''अच्छा तो लोकतंत्र की रक्षा के लिए लोगों का वोट डालना बहुत ज़रूरी है.''

अपनत्व

पूरे ज़ीने में काफी चहल-पहल थी. छोटे-छोटे कई बच्चे ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे और खेल-कूद रहे थे. दरअसल 'शर्माजी के यहाँ मेहमान आए हुए थे. उनकी बहन के बेटे की शादी थी. वो अपने पूरे परिवार के साथ शादी का निमंत्रण देने और भात न्यौतने के लिए आई हुई थी. शर्माजी ऊपर वाले फ़्लैट में रहते हैं. उनके नीचे वाले फ़्लैट में गुप्ताजी का परिवार रहता है. दोनों परिवारों में बड़ी घनिष्टता है. शर्माजी के परिवार ने शाम की चाय पर गुप्ताजी के परिवार को भी बुला लिया था. उनकी बहन ने गुप्ताजी के परिवार को भी शादी का कार्ड दिया और आने का आग्रह किया. चाय के साथ खाने-पीने का इतना अधिक सामान था कि सबके पेट भर गए. मिसेज गुप्ता ने कहा कि आज रात खाने की छुट्टी. खाते-पीते और गपशप करते शाम कब बीत गई पता ही नहीं चला. चाय के बाद जब गुप्ताजी का परिवार बाहर निकला तब तक बाहर अँधेरा हो चुका था और सबने अपनी-अपनी बाहर की लाइटें जला ली थीं. सीढ़ियों में कॉमन लाइटें नहीं हैं लेकिन सबके दरवाज़ों पर रोशनी की अच्छी व्यवस्था है और रात देर तक लाइटें जलती रहती हैं. गुप्ताजी के घर के बाहर तो कभी-कभी सारी रात ही लाइटें जलती रहती हैं. जब गुप्ताजी का परिवार जाने लगा तो मिसेज शर्मा ने मिसेज गुप्ता से यूँ ही अपनापन जताने के लिए कहा, ''आज

मेहमानों को जाते-जाते देर हो जाएगी. आप अपनी लाइटें जलती रहने देना." "ये भी कोई कहने की बात है?" मिसेज गुप्ता ने भी उतने ही अपनेपन से जवाब दिया. डिनर के बाद जब मेहमान जाने के लिए बाहर निकले तो देखा कि नीचे सीढ़ियों में पूरी तरह से अँधेरा पसरा हुआ था. सभी लाइटें बंद थीं. अगले दिन मिसेज शर्मा ने शिकायत करते हुए मिसेज गुप्ता से कहा, "अरे भई वैसे तो आपकी लाइटें सारी-सारी रात जलती रहती हैं. कल कहने के बावजूद लाइटें जल्दी बंद कर दीं." मिसेज गुप्ता ने जवाब दिया, "अब हमें क्या पता था कि आपके मेहमान इतनी ज़्यादा देर से जाएंगे? फिर रात को सोने के बाद कौन उठता लाइटें बंद करने?"

-सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली

माँ

आदत है हर रोज शाम को मन्दिर जाकर कुछ समय बिताने की. दिवाली थी उस दिन. पूरा दिन काफी व्यस्त रही, शाम को भी काम खत्म नहीं हो रहा था. पर मन था कि एक चक्कर मन्दिर का काट आऊ. जैसे-तैसे काम निबटाकर मैं मन्दिर चली गई. मन्दिर का पुजारी उस अहाते में ही छोटी सी कुटिया में रहता था. मन्दिर में माथा टेक कर मैं पुजारी जी के पास कुछ देने चली गई. देखा पुजारी जी घर में पूजा कर रहे थे व उनकी आँखों से बरबस आँसू टपक रहे थे. मैं भी जूते उतार कर धीरे से वहां बैठ गई. 5–10 मिनट बाद उन्होंने आँखें खोली. मुझे देखकर बोले, "माफ करना बिटिया, कुछ भावुक हो गया. देखो ये मेरी माँ की तस्वीर, मैं आज के दिन इसकी पूजा करता हूँ. आपको बताऊँ, हम 9 भाई-बहन थे, मेरा बाप शराबी था, दिवाली से 4 दिन पहले ही जुआ खेलने बैठ जाता था, मेरी गरीब माँ, फटे-पुराने कपड़ों में, प्लास्टिक की चप्पल पहने, कमजोर सी देह में लोगों के घरों में बासन माँजती, झाड़ू-फटका करती. इन दिनों लोग उससे बहुत काम लेते, घर साफ करवाते, कपड़े धुलवाते, बासन मंजवाते, फिर कहीं मिठाई का डिब्बा और 5 रू. देते. वह सारी थकान भूल जाती व सामान लाकर हमारे सामने खोलकर रख देती. हम सब भाई-बहन बिन कुछ महसूस किये खुश हो-होकर, शोर म
चाकर खाते. बस हमारी दिवाली मन जाती. आज सब कुछ है पर माँ नहीं है." कहकर वे फिर से रोने लगे.

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये,
वार्षिक–150/रुपये,
पंचवर्षीय–750/रुपये,
आजीवन–1500/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये

खाता संख्या–66600200000154, आईएफएससी कोड–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

काला पानी उजली रेत

आज वापिस उसी गांव में जाने का अवसर शैलजा को प्राप्त हुआ है. जहां आज से 25 वर्ष पूर्व शैलजा को इसलिये जाना पड़ा था कि वह राजकीय सेवा करके अपने जीवन में स्थायित्व प्राप्त कर सके.

महानगर से उखड़े उसके पैरों को आखिर कहीं तो ठोस जमीन की तलाश करनी ही थी तो फिर अगर उस छोटे से गांव में उसकी सर्विस लगी और उसे जाना पड़ा तो इसे उसकी नियति ही कहा जायेगा. अनजाने चेहरे, पहनावे अलग उनकी भाषाये अलग, जिनका वह एक शब्द भी समझने में असमर्थ थी.

उस गांव के बारे में लोगों की इतनी धारणाये बन चुकी थी कि वहां जाना कोई भी पसन्द नहीं करता था. वहां पर किसी की पोस्टिंग होने पर उसे यही कहा जाता कि इसे काले पानी की सजा मिली है कोई नौकरी थोड़े ही मिली है?

उस गांव में इतने अधिक बिच्छु निकलते थे कि उनकी बोरियों में भरकर गांव की सरहद के बाहर छोड़ना पड़ता था, लेकिन दूसरे दिन वे वापिस उस स्थान पर दिखाई पड़ते थें, जहां से उनको पकड़ा गया था.

उस गांव के स्कूलों के बच्चे इतने अधिक आतंकित थे कि पुस्तक पढ़ते-पढ़ते उनके हाथों से सांप और बांडी की आकृति बन जाया करती थी उसके पीछे कारण यह था कि कई बार पान के कुण्ड में बान्डी गिर गई थी और उसका जल इतना विषैला हो गया था कि बच्चों के पीने योग्य नहीं रहा था. बच्चे अपने घरों से पानी की बोतलें लेकर आया करते थे. उस गांव में अगर किसी से पीने के लिये एक गिलास पानी मांगा जाता तो वे उतर में यही कहते-''बाई जी थे एक गिलाध दूध भले ही लेलो पण एक गिलास पानी अठ्ठे थाने नहीं मिलेला.''

जिस समय उस गांव में ट्रेन पानी का टैंकर लेकर आती लोगों की लाइन लग जाती. बाल्टी, घड़ों की दूर तक कतार दिखाई पड़ती. घूंघट में छिपे कुछ चेहरे गर्मी में तपते रहते और लाइनों में लगे रहते.

उस गांव में अगर किसी से पीने के लिये एक गिलास पानी मांगा जाता तो वे उतर में यही कहते-''बाई जी थे एक गिलाध दूध भले ही लेलो पण एक गिलास पानी अठ्ठे थाने नहीं मिलेला''

ऐसे गांव में जब शैलजा को शिक्षिका बनने का नियुक्ति पत्र मिला तो वह अवाक रह गई कैसे सामंजस्य बैटायेगी वह उन अपरिचित अनजान लोगों के साथ जिनकी बोली से वह नितान्त अपरिचित है कहां गंगा नही के किनारे क्रीड़ा करती यह किशोरी शैलजा और कहां वह पूर्ण यौवना शैलजा सुहाग की नव रश्मियों से महकती खिलखिलाती, कैसे सामजस्य बैठा सकेगी मरूस्थल में छिपे इस काले पानी के परिवेश से कहीं उसे एक एक बून्द पानी के लिये तरसना तो नहीं पड़ेगा? कहीं प्यास से उसका प्राणांत होकर यही उसके जीवन की समाप्ति तो नहीं हो जायेगी? एक अजीब सा अर्न्तद्वद्व चल रहा था शैलजा के हृदय में जिससे वह जितनी ही उबरने की कोशिश करती उतनी ही डूबती जाती. कहीं पर स्थाई रूप से बसने के लिये अर्थ का आधार प्रमुख होता है और वह उसे मिल रहा था पर यह आधार कैसा था जिसका पहला ही छोर इतना दुखदायी और भयावह था कि बिन पानी सब सून वाली उक्ति चरितार्थ हो रही थी. यह नियति उसे कहां खींच कर ले आई थी.

कैसे तालमेल बैठा सकेगी वह अपनी इस नूतन दिनचर्या से. पर कहते है हर वस्तु के दो पहलू होते है जहां धूप तेज होती है वहां छाया के लिए एक दो वृक्ष ऐसे भी मिल जाते है जिनकी सघन छाया में विश्राम करके राहगीर अपनी सारी तपिश भूल जाता है. उसी तरह शैलता को भी उस विषम स्थिति में उजाले की एक किरण ऐसी भी मिल गई थी जिससे उसके सिर पर रखे बोझ को राहत सी मिल गई थी. एक सुखद अहसास के रूप में उसे संबल मिला था गरिमा जैसी अद्भूत व्यक्तित्व वाली महिला का. शैलजा ने पहले पहल जब स्कूल परिसर में प्रवेश किया था और उनसे यह कहकर परिचय कराया गया था कि ''तुम इन्ही के मार्ग दर्शन में कार्य ग्रहण करोगी यह तुम्हारी प्रधानाध्यापिकाजी है.'' तब शैलजा को जरा भी इस बात का यकीन नहीं हुआ कि यह उसकी हेडमिस्टेस हो सकती है. होता भी कैसे उनकी वेशभूषा इतनी साधारण थी, बातचीत में इतनी सहजता थी कि विश्वास ही नहीं होता था. सांवला रंग, मुंह पर चेचक के दाग, माथे पर बड़ी सी लाल बिन्दी, सीधे पल्ले की साड़ी

पहने हुए उनक व्यक्तित्व उन्हें घरेलु नारी के रूप में ज्यादा परिभाषित करता था एक प्रशासिका के रूप में तो बिलकुल ही नहीं और फिर उनका प्रथम परिचय में ही आपसे तुम का संबोधन आत्मीयता से परिपूर्ण बातें. और शैलजा का दिमाग तो उस समय सातवें आसमान पर था. कलकता महानगर में रही शैलजा ने चमक दमक ही देखी थी. महानगर की भीड़ में अभिजात्य महिलाओं के लिपेपुते चेहरों को ही देखा था. उस समय उसे यह अब अनुभव ही कहा था कि इस सांवले से व्यक्तित्व में ममता से परिपूर्ण सागर लहरा रहा है. जिनकी रसमीनी लहरे हृदय को प्लावित कर रही है और फिर तो बातों का सिलसिला चल निकला. उसे यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि वे महिला यूपी की मूल निवासी है. जहां की वो है और अभी भी वो जहां से नौकरी करने आई है वो भी वहीं पर रहती है. फिर तो यहां तक तय हो गया कि वे जब भी छुट्टियां होगी या रविवार पड़ेगा अपने घर साथ साथ ही जायेंगी वे स्कूल की अध्यापिका न रहकर बस और ट्रेन की सहभागी भी बन गयी थी. जब भी शैलजा के समक्ष शैलजा उसे एक मिनट में हलकर देती. वे दोनों एक दूसरे की पूरक सी बन गई थी. जब भी शैलजा के समक्ष कोई समस्या आती गरिमा उसे चुटकियों में हल कर देती और गरिमा के सामने शिक्षण संबंधी कोई कठिनाई आती थी. शैलजा उसे एक मिनट में हलकर देती। वे दोनों जैसे एक दूसरे की पूरक सी बन गई थी प्रधानाध्यापिका एवं अध्यापिका प्रशासिका एवं कहकर्मी का भेदभाव उनमें मिट गया था वे एक वे एक दूसरे की पूर्णरूपेण सहयोगी बन चुकी थी। शैलजा की अवस्था अभी मरूणाई की थी वह अकेलेपन में अकसर घबरा उठती थी और घुटनों में सिर देकर रोने बैठ जाया करती थी जब उसे घर की याद आती तो उसका मन पढ़ने में भी नहीं लगता था वह छुट्टी लेकर बस में बैठने को आतुर हो जाया करती। जल्दी से जल्दी घर पहुंचकर अपने पति से मिल सके उस समय गरिमा जी उसके कंधे पर हाथ रख के उसकी पीठ पर धीरे-धीरे स्नेह से हाथ फेरती और समझाती ''देखों शैलजा दो दिन बाद शनिवार आने वाला है उसके साथ रविवार की छुट्टी पड़ जायेगी और तुम अपने घर दो दिन रूक सकोगी। अगर तुम आज जाओगी तो तुम्हें कल फिर वापस लौटना पड़ेगा। तुम्हारी सर्विस नई-नई है अभी तुम्हें एक दिन का भी अवकाश नहीं मिल सकता। मैं नियमों से बंधी हुई हूं नही तो तुम्हें तुम्हारे घर भेज देती।''

शैलजा उनके आंचल में मुंह छिपाकर नन्ही बच्चो की तरह रोने लगती वह भूल जाती कि वह बच्ची नहीं अपितु बच्चियों की टीचर हैं तब वे उसकी पीठ थपथपा कर कहती ''उठो हाथ मुंह धो लो गरम गरम चाय पी लो दो दिन बाद हम दोनों साथ-साथ चलेंगे और दो दिन रहकर साथ-साथ लौट आयेंगे। उस समय उसका चेहरा एक नई आभा से दीप्त हो उठता।

सच पूछें तो शैलजा एवं गरिमाजी का आपसी मेलजोल यह रंग लाया कि उसने गांव के विकास में भी अहम भूमिका निभाना शुरू कर दिया। जो विद्यालय केवल मिडिल था वह गांव वालों एवं उनके समन्वित प्रयास से माध्यमिक तक क्रमोन्नत हो गया पर तब भी कभी गरिमाजी ने इसका श्रेय स्वयं को नहीं दिया सदा यही कहती रही- ''भाई गांव वालों ने बहुत प्रयास किया। यह उनके सद्प्रयासों का फल है कि बालिका शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय ने विकास किया हैं मैं तो एक साधारण सी प्राध्यापिका हूं मेरे वश में क्या है। हां पर मैं इसकी छवि को अवश्क स्थायीरूप प्रदान करूंगी।'' तब एक निश्चय किया गया कि कन्यों न विद्यालय का वार्षिकोत्सव किया जाये जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हो तथा प्रतिभाशाली छात्राओं को पारितेषिक देकर उनका उत्साहवर्धन किया जाये, तब भी गरिमाजी ने यहीं कहा- ''ठीक है शैलजा तुम मंच पर सारे कार्यक्रम करा लेना, प्रतिभाशाली छात्राओं की सूची तैयार कर लेना। जिनको क्या पारितेषिक देना है इसका निर्णय भी तुम्हीं कर लेना मैं तो स्टेज के पीछे रहकर चाय-पानी का प्रबंध कर लूंगी।'' यही उनकी विशेषता थी। सब कार्यों की रूपरेखा तैयार करना उन्हें क्रियान्वित करने में पूरी शक्ति एवं क्षमता का उपयोग करना पर किसी के भी सामने उसका प्रदर्शन नहीं करना। आज के युग में इस प्रकार के सहज स्वभाव के व्यक्तित्व कम ही मिलेगा आज तो लोग थोड़ी सी उपलब्धि हासिल होते ही अखबारों के पृष्ठों पर छा जाना चाहते हैं और इसी में अपना गौरव अनुभव करते हैं। शैलजा की स्मृति में वह दृश्य अभी भी जीवित है जब वार्षिकोत्सव के समय समस्त कार्यक्रमों का संयोजन उसी ने किया। ग्राम के गणमान्य व्यक्तियों को आंमत्रित करके उनके हाथों से पुरस्कार दिलवाया वार्षिक प्रतिवेदन भी उसी ने पढ्य तथा सबके प्रति आभार प्रदर्शन भी उसी ने किया पर गरिमाजी एक बार भी मंच नहीं आई। केवल पर्दे के पीछे बैठ कर चाय पानी का प्रबंध करवाती रही। सत्रारम्भ था। गर्मी का मौसम था पर उनकी

कुशल व्यवस्था में किसी को भी पानी के लिए चीख-पुकार मचाते नहीं देखा गया। शैलजा बारम्बार यह प्रयास करती रही कि प्रधानाध्यापिका रूप में उनका परिचय सबके सामने आये पर वे यही कहती रही ''नहीं मैं यही ठीक हूं। मैं बैठे-बैठे सारा प्रबंध कर रही हूं तुम कार्यभार संभाल लो।''

उस दिन तो शैलजा उनके सामने नतमस्तक हो गई थी। ओह! इतना सहज व्यक्तित्व और उसमें स्नेह और ममता का बहता हुआ अनवरत स्रोत। पर अच्छे लोगों का साथ कम ही रहता है। शैलजा का वहां से स्थानान्तरण का आदेश आ गया था। वह अक्टूबर का महीना था। हल्की हल्की सर्दी का आभास होने लगा था। शैलजा को अपने घर के पास स्थित स्थान में जाने की खुशी थी तो उनके छूटने का दुःख भी था। इस छल प्रपंच से परिपूर्ण संसार में कहां मिलेंगे ऐसे सहज एवं सरल व्यक्तित्व वाले लोग ममत्व पाश में आबद्ध होकर मनुष्य अपने सारे दुःखों को भूल जाता है। जिस समय उसकी बिदाई उस गांव से हुई गरिमा जी ने उसकी विदाई इतने भावभीने तरीके से की जैसे कोई बेटी को विदा करता हो। उन्होंने बाजार से बनी हुए स्टोव एवं अंगीठी के पास बैठ गई थीं स्कूल के पीछे स्टाफ क्वार्टर में उन्होंने उसके लिये विशाल भोज का आयोजन किया था और अपने हाथें से रचरच कर मठरियां एवं मावे की बरफी तथा कचौड़िया बनाई थी और छुहारे की चक्की। सभी खाद्य वस्तुएं इतनी अच्छी बनी थी कि लोग अंगुलियां चाटते रह गये थे। सभी ने उनके पाक कौशल की प्रशंसा की थी। उसके पहले किसी को भी ये पता नहीं था कि विद्यालय में सुदृढ अनुशासन रखने वाली एक प्रधानाध्यापिका पाक कला में भी इतनी कुशल हो सकती है। सभी चमत्कृत से रह गये थे।

उस विदा के पश्चात शैलजा और गरिमा जी की राहे अलग अलग हो गई थी, क्योंकि उनका कार्य क्षेत्र अलग-अलग स्थान हो गया था। शैलजा को भाग्यवश वह स्थान मिला था जहां चमत्कारी करणी माता का मन्दिर था जहां पर मूषक (काबा) मुक्त भाव से विचरण करते थे और प्रसाद ग्रहण करते थे। उस मंदिर की ख्याति दूर दूर तक फैली हुई थी उस मन्दिर के दर्शनों के लिये देश विदेश से लोग आया करते थे अगर परिक्रमा देते समय किसी यात्री के पैरों से मूषक महाराज दब जाते या स्वर्गवासी हो जाते तो चांदी का मूषक बना कर देना पड़ता था। कभी कभी शैलजा सोचती कितनी भाग्यशाली है वो जिस करणी माता के दर्शनों के लिए लोग देश-विदेश से श्रद्धा पूर्वक लोग आते हैं वहीं स्थान उसका कार्य क्षेत्र बन गया है। बस से उतर कर विद्यालय जाने के पूर्व करणी माता जी के दर्शन करना एवं सांय की घर लौटने के पूर्व उनकी परिक्रमा करना अवश्य उसने पूर्व जन्म में कोई सत्कार्य किया होगा जिसका इतना सुखद परिणाम उसे मिल रहा है। विद्यालय में चाहे कितनी ही चख-चख क्यों न होती अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये कितना ही संघर्ष क्यों न करना पड़ता पर माता जी के मंदिर में पैर रखते ही वह अपनी सारी व्यथा कथा भूल जाती उसे लगता जैसे वह तपन भरे रेगिस्तान से चलकर किसी सुखद छाया के तले विश्राम कर रही हो उस समय शैलजा को गरिमा जी की स्मृतियां फिर व्याकुल करने लगती कितना ध्यान रखती थी वे शैलजा का। और यहां पर पच्चीस किलोमीटर का सफर तय करके सवेरे उठ कर घर से भागों और जरा सी भी पांच मिनट अगर देर हो जाये तो अधिकारी को उपालभ भरा स्वर सुनने को मिलता। ''अरे इतनी देर से आने से कैसे काम चलेगा स्कूल में प्रार्थना कौन करायेगा? छात्राओं को पंक्ति बद्ध खड़ा कौन रखेगा''? क्या हमने ही सब जिम्मा ले रखा है।''

लगता जैसे किसी ने कानों में गर्म-गर्म शीशा पिघला कर डाला दिया हो। हैड आफिस में शिकायतें की जाती भी लिखित में। कितनी ही निष्ठा से अध्यापन कार्य कराते तो भी यही सुनने को मिलता कि ''इनका तो दिमाग अपने घरवार पति बच्चे में लगा रहता है ये क्या खाक पढ़ायेगी।''

कितना कटु सत्य उन लोगों की जबान उगलती थी कहां गरिमा जी का वो गांभीर्यमय स्वरूप और कहां वे ठकुर सुहाती बाते पर माता जी के मंदिर में दर्शन करते ही इन सब व्यंग्य वाणों की तीखी धार को शैलजा भूल जाया करती थी और माताजी का शान्त सात्विक रूप उसे आस्था से अभिभूत कर देता था।

कहते है कि यह धरती गोल है, और जीवन यात्रा अनिश्चित पर रास्ता चलते चलते कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी मिल जाते हैं। जिनसे पहले कभी आपका आत्मीयता पूर्ण सम्बन्ध रहा हो, इसी क्रम में जब पाँच वर्ष बाद शैलजा की उन गरिमा जी से मुलाकात हुई जिन्होंने उसके जीवन में अहम भूमिका निभाई थी तो एक बारगी उनको देखकर उसका मनमयूर नृत्य कर उठा था। सब कुछ वहीं तो नहीं था, बदल गया था बहुत कुछ। रंगीन साड़ियों का स्थान श्वेत साड़ियों ने लिया था। माथे पर सिंदूर की बिन्दी का स्थान चन्दन के हल्के

टीके ने ले लिया था। गले में सोने की चेन के स्थान पर तुलसी दल की माला पहनी हुई थी। चेहरे पर प्रौढ़ता आ गई थी। पति विहीन होने पर भी दो पुत्रों और एक पुत्री पर वे अपनी ममता का उन्मुक्त स्त्रोत बहाती रहती थी। बहुत कुछ बदलने पर भी नहीं बदला था तो उनका स्नेह परित हृदय जो हर किसी का बाँह फैलाये स्वागत करता था। नहीं आयी थी उनकी आवाज में शिथिलता, वह अभी भी प्रार्थना सभा में पाँच सौ छात्राओं के बीच त्वरित गति से आदेश देकर उन्हें मिनटों में अनुशासन बद्ध कर दिया करती थी। उनकी आवाज सुनते ही छात्रायें पंक्तिबद्ध खड़ी हो जाया करती थी। उनका एक राउन्ड लगते ही प्रत्येक छात्रा कक्षा छोड़कर प्रार्थना स्थल पर उपस्थित हो जाया करती थी। अबकी बार जब शैलजा और गरिमा जी मिली तो वे सहकर्मी के रूप में थी। जबकि पहले गरिमा जी उसके अधिकारी के रूप में थी। पर जब गरिमा जी ने पहले ही कभी अधिकारी का रोब दिखाया नहीं था तो अब भला क्या दिखाती। यह अवश्य था कि अपने परिवार का सम्पूर्ण दायित्व साथ ही बूढ़े श्वसुर की सेवा का दायित्व भी उनके ऊपर ही था।

वास्तव में इस संसार में जो जैसा करता है, वैसा ही फल उसे मिलता है, जो दूसरो को खुशी देते है, उन्हे खुशियां ही प्राप्त होती है। जो दूसरों के लिये कुवां खोदते है उनको खाई तैयार मिलती है।

गरिमा जी इसका अपवाद थी। उन्होंने अपने चालीस वर्ष के जीवन में चाहे वह वाहय क्षेत्र हो शिक्षा का क्षेत्र हो, या गृहस्थ जीवन सबमें खुशियां बिखेरी थी, उन्होंने स्वयं त्याग किया था दु:ख सहन किये थे पर अपनी जीभ से किसी को दो शब्द भी उलाहने के नहीं दिये थे वे सदा यही कहती–

मैं तो अपना कर्म कर रही हूँ। आगे प्रभु की इच्छा। उसे जिस अवस्था में रखना होना रखेगा।''

नये विद्यालय के वातावरण में सहयोगी अध्यापिका बन कर उनका व्यवहार सबसे स्नेहमय ही रहा। इसलिये जब उनके श्वसुर को पक्षाघात हो गया और नन्हीं पोतियां उषा, निशा स्कूल जाने योग्य हो गई तो उनके लिये घर बाहर की जिम्मेदारियों में सांमजस्य करना कठिन हो गया। छुट्टियां लेकर अपने दायित्व का निर्वाह कब तक करती और इतनी छुट्टियां थी भी कहां।

बहुत कुछ बदलने पर भी नहीं बदला था तो उनका स्नेह परित हृदय जो हर किसी का बाँह फैलाये स्वागत करता था। नहीं आयी थी उनकी आवाज में शिथिलता, उनकी आवाज सुनते ही छात्रायें पंक्तिबद्ध खड़ी हो जाया करती थी।

उस समय उनका साथ दिया था विद्यालय की प्राचार्या श्रीमति नील ने जिनका लम्बा चौड़ा सुदर्शन व्यंतिव अपनी अनुशासनशीलता के लिये विख्यात था। पर हृदय मोम सदष्श्य था, जो दूसरो के दुखों को बांटने के लिये जल्दी ही सदय हो जाया करता था। इसलिये उन्होंने उनको स्कूल टाइम में ही रोज एक घंटे की छूट देनी शुरू कर दी थी जो स्वल्प अवकाश के साथ समाहित थी। उस एक घंटे में गरिमा जी अपने घर जो विद्यालय के निकट ही था उसकी ओर त्वरित कदमों से चल पड़ती, बच्चों को तैयार करके स्कूल भेज देती क्योंकि बेटे बहू डॉक्टर थे और शहर से बाहर प्रैक्टिस करते थे। और श्वसुर जी को शौचादि स्नान करा कर कपड़े बदल कर नाश्ता दवा देकर फारिंग हो जाती। बूढ़े श्वसुर जी का रोम रोम मानो आर्शीवाद देता–

''फूलो फलो ''बहू सदा खुशी रहो। ईश्वर तुम्हारे जैसी बहू रानी सबको दे।''

वास्तव में आज के युग में कौन वष्द्धों की सेवा करता है वे भले ही सारा जीवन सन्तान को सवारने और उसका जीवन बनाने में लगा देते है पर जब वे अशक्त हो जाते है तो घर के दरवाजे उनके लिये बन्द हो जाते हैं वे लगते है जैसे सन्तान के लिये कोई दुर्बह बोझ हों और वे अपने दायित्वों से मुक्ति पाने के लिये किसी वृद्धाश्रम का द्वार खटखटाते हैं, जहां बूढ़े मां बाप को रखकर अपनी जिम्मेदारियों से निजात पा सकें।

यह सच है कि गरिमा जी ने प्राण प्रण से पितृ तुल्य श्वसुर जी की सेवा की थी पर जाने वाले को कौन रोक सका है। एक दिन वे भी इस असार संसार को छोड़ कर चल दिये, जब विद्यालय में श्रद्धांजलि सभा करने के पश्चात समस्त स्टाफ उनके घर पहुंचा तो हमेशा सौम्य एवं शान्त रहने वाली गरिमा जी बच्चों की तरह सुबह कर रो पड़ी थी और यही कहे जा रही थी–

''देखों न कितना सूना घर लग रहा है, लगता है, अब कोई काम ही नहीं रह गया है वे यहां सोते थे यहां बैठते थे। घर की हर वस्तु पर उनकी छाप है केवल वहीं नहीं हैं।''

अपने पति की मृत्यु के बाद गरिमा जी ने श्वसुर की सेवा में अपने आप को इतना व्यस्त कर लिया था, कि कुछ समय के लिये वे दुःख के एहसास से उबर सी गई थी। पर फिर वहीं सूनापन उनके जीवन में लक्षित हो रहा था। केवल थोड़ी बहुत चपलता जीवन में थी वह थी अपनी पोतियों निशा, उषा के कारण और जो थोड़ी बहुत सरसता थी वह थी अपनी पुत्री सुनन्दा के कारण, जो उनकी एकमात्र इकलौती कन्या थी। सांवले रंग की तीखे नाक नक्श वाली छरहरे बदन की कोमल कली के समान कन्या अपने दो भाइयों विजय और अजय के बाद हुई थी। वह सभी की आंखों की पुतली थी पर जब डाक्टरों ने यह घोषित कर दिया कि उसे कैन्सर है तो विचलित सी हो उठी थी गरिमा जी उस दिन। उसके जीवन की मियाद बहुत कम घोषित कर दी गई थी। दोनो भाई डाक्टर थे दोनों भाभी भी डाक्टरनी थीं, पर चिकित्सा विज्ञान वो इतनी प्रगति कहां कर सका था कि वे अपनी एकमात्र इकलौती बहन को बचा सकते थे और अन्त में हृदय पर पत्थर रखकर गरिमा जी ने उसे अंतिम विदा दी थी। वह अन्दर ही अन्दर टूट चुकी थी। इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों के पश्चात भी उनके व्यवहार में वर्षों पहले की सौम्यता ही विद्यमान थी। तभी तो सेवा निवृत्ति के अवसर पर उनके कहे हुये वाक्य शैलजा के कानों में आज भी गूंज रहे हैं- ''ज्यादा बोलने में मैं विश्वास नहीं करती, पर इतना अवश्य कहूंगी कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीना सीखों, हर चुनौती को स्वीकार करो। यही जीवन है।''

कोरोना

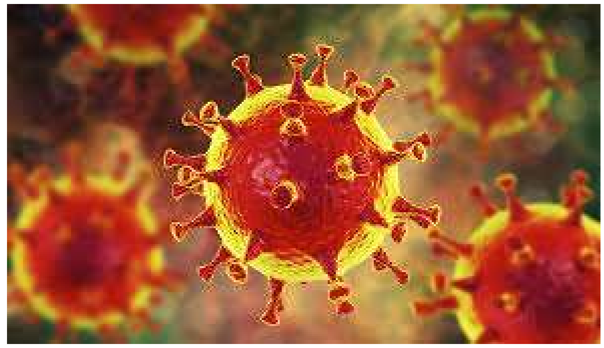

चीना देश से कोरोना चिनगारी,
घूम-घूम कर विश्व भर पसरी,
छीन लिया लोगों का जान हत्यारी,
चिंता हो रही है लोगों को यह चमत्कारी।

कोरोना कोरोना इसे नहीं डरना
काम काज करके इसके साथ ही जीना,
किसी न किसी दिन मरना ही है ना?
कसरत करके कायरता को भगाना।

शाला कॉलेज बंद हो गयी है,
सुबह से शाम तक बच्चों की शोर है,
शैतान की तरह नाचती दौड़ती है,
सुनते नहीं, सोचते नहीं, कैसी हालत है।

बरसात दिन-रात बरस रहा है,
बाद में बचाना बहुत मुशकिल है,
बाँध बगीचे भवन मकान बरबाद हो रहे हैं,
बरबादी की यह लीला कब तक चलेगी।

राजकीय लोग अधिकार को लड़ रहे हैं
राहत कार्य में कोटि-कोटि धन लूट रहे हैं
रावण राज्य की तांडव नृत्य चल रहा है,
रोग का इलाज ढूंढने दिन-रात काम कर रहे हैं।

मंदिर मुनिजन मंत्र-तंत्र सब बंद हो गये
मानव का दानव गुण का यह प्रभाव है
मुश्किल से बचाना है तो धर्म मार्ग ही आधार है
मनुकुल की उद्धार के लिये धर्म मार्ग अपनाना है।

गरीबों ने रोटी कपड़ा मकान से वंचित है
गली-गली में कोरोना बीमारी फैल रहा है
बेरोजगारी से मुक्ति पाने तड़प रहे हैं
भारत माता के सुपुत्रों भली-भाँती से सोचना है।

संचार व्यवस्था स्थगित हो गयी है,
सब कर्मचारियों को काम नहीं है
सब परिवार संकट में पड़े है
संकट से बचने का राह ढूंढ रहे है।

मास्क पहनकर अंतर बचाओ
मस्ती-मोज को दूर भगाओ
मानव कल्याण काम में लगाओ
महा मानव बनकर कोरोना हटाओ।

विश्व भर यह विचित्र लीला देखो,
विचलित न होकर इसे रोको
विरता से इस कोरोना को भगाना सीखो,
विश्व से यह बीमारी को भस्म कर फेंखो।

-मंजुनाथ जी. हेच.
विश्रांत हिंदी शिक्षक, शिरालकोप्पा,
शिकारीपुर, शिवमोग्गा, कर्नाटक

हिन्दी रीति काव्य नए संदर्भ में

नवाचार दृष्टिकोण पर आधारित शोध लिखा जाना चाहिए. : डॉ० शैलेन्द्र

'आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने स्वयं इस युग का नामकरण रीतिकाल किया था. इसे अलंकृत काल, कलाकाल, श्रृंगार काल, रीति श्रृंगार युग नाम से भी विभिन्न विद्वानों ने सम्बोधित किया है. काव्य को बहुआयामी विस्तार एवं विकास का अवसर भी रीतिकाल में ही मिला.' उक्त विचार आयोजन के मुख्य अतिथि प्रो० डॉ० शैलेन्द्र कुमार शर्मा, कुलानुशासक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र. ने कही. उन्होंने रीति काव्य के बहुआयामी साहित्य पर प्रकाश डाला तथा नवाचार दृष्टिकोण आधारित शोध पर बल दिया.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज की लखनऊ ईकाई द्वारा एक आनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अनेक वरिष्ठ एवं नवोदित साहित्यकारों ने प्रतिभाग किया. गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने की तथा मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पूर्व अध्यक्ष उच्च शिक्षा चयन बार्ड प्रो० परशुराम पाल रहे. निर्णायक मंडल में संस्थान के अध्यक्ष एवं पूर्व प्राचार्य डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख एवं सेवा. वित्त निदेशक श्री नरेन्द्र भूषण रहे.

गोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रो० परशुराम पाल ने हिन्दी रीति काव्य को दोषमुक्त करते हुए उस काल के कवियों की सामाजिक विवशता से सभी को अवगत कराया तथा तत्कालीन अनेक श्रेष्ठ कवियों तथा उनकी अनुपम कृतियों का उल्लेख किया.

वक्ताओं में डॉ सीमा वर्मा जी ने कहा 'रीतिकाल को केवल नकारात्मक

आलोचना के मापदंड पर रख कर समझा नहीं जा सकता, हमारे वरिष्ठ साहित्यकारों व आलोचकों ने भी 200वर्ष के रीति काव्य की राजनैतिक परिस्थितियों तथा सामाजिक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में काव्य में निहित गुण दोष की संतुलित आलोचना की है.

प्रयागराज की डॉ० पूर्णिमा मालवीय ने कहा 'डॉ० नागेन्द्र जी रीतिबद्ध कवियों को दो श्रेणियों में विभाजित करते है- आचार्य कवि और काव्य कवि. आचार्य कवियों के और भी उपवर्ग है-सर्वांग निरुपक, रस निरुपक, अलंकार निरुपक और पिंगल निरुपक. इससे गड़बड़ी ये हुई कि एक ही कवि को अलग-अलग वर्णो में रखना पड़ता है जिससे समवेत प्रभाव खंडित हो जाता है.'

रायबरेली, उ.प्र. से श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली' ने कहा 'रीतिकाव्य के नए संदर्भों की सीढ़ी पर चढ़ते हुए हम पाते हैं कि रीतिकाल के कवियों ने कविता के जिन गुणों पर जोर दिया, पाठको की दृष्टि में वे ही गुण कविता के बड़े मूल्य रहे होंगे.

लखनऊ की डॉ अर्चना वर्मा ने कहा 'विशेष पद रचना अर्थात काव्य के शोभाकारक शब्द अर्थ के धर्मों से युक्त पद रचना ही रीति है. शब्द अलंकार ध्वनि आदि जिससे शब्द सौन्दर्य बढ़ता है रीति के बहिरंग तत्व हैं.

छत्तीसगढ़ से श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव ने कहा 'रीति काव्य में सूर, मीरा घनानंद जैसे महान कवियों की पुकार नहीं मिलेगी और ना ही जायसी, गोस्वामी

स्वामी तुलसीदास अथवा आधुनिक युगिन विशेष महाकाव्यों के तुल्य व्यापक जीवन समीक्षा और छायावादी कवियों का सूक्ष्म सौंदर्य चित्रण ही यहां दिखाई देगा, किन्तु मुक्तक परंपरा का जैसा उपयोग रीति काव्य में हुआ वैसा ना उससे पहले के किसी काव्य में और ना ही बाद के काव्य में संभव हो सका.

संस्थान के अध्यक्ष एवं निर्णायंक डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख शोध पर प्रकाश डालते हुए कहा 'शोध की अपनी महत्ता है. शोध कार्य किसी तपस्या से कम नहीं है. उच्च शिक्षा की दृष्टि से गुणात्मक शोध की अत्यंत आवश्यकता है. आज के आयोजन में प्रस्तुत शोध सामग्री उच्चकोटि की रही. निर्णायक मंडल के सदस्य श्री नरेन्द्र भूषण ने कहा-'विचार गोष्ठी व शोध प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्थान वर्तमान व अतीत के मध्य एक कड़ी बनने का कार्य कर रहा है. जिससे नवोदित साहित्यकार सिर्फ निराला व पंत तक ही सीमित न रहें.'

गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० सूर्य प्रकाश दीक्षित ने कहा-'उपयोगी साहित्य इस युग में बहुत लिखे गये है. नाटक, आख्यायिकाएं, जो कहानी, उपन्यास का आरम्भिक रुप है, भी लिखी गई. पहली गद्य कृति गंग कवि के नाम से इसी युग में लिखी गई. रीतिकाल में साहित्य का सर्वांगीण रुप दिखाई देता है. इस युग को उत्तर मध्य काल कहना ज्यादा न्यायोचित है. आवश्यकता है शोधोपयुक्त अध्ययन की.

गोष्ठी में संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने परिणाम की घोषणा की. विगत माह के शोध आडियों में लखनऊ की डॉ० सीमा वर्मा एवं शोध लेख में जिसमें प्रयागराज, उ.प्र. की डॉ० पूर्णिमा मालवीय विजयी रही.

गोष्ठी में चार साहित्यकारों ने लघु शोध प्रस्तुत किए तथा छः चयनित साहित्यकारों ने निर्धारित विषय पर विचार प्रस्तुत किए. विचार गोष्ठी में सरस्वती वन्दना डॉ अर्चना वर्मा-लखनऊ तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सीमा वर्मा-लखनऊ ने दिया. विचार गोष्ठी का सफल संचालन एवं संयोजन लखनऊ से हिन्दी सांसद डॉ वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या' ने किया. गोष्ठी में शिलांग मेघालय से संस्थान की हिन्दी सांसद डॉ० अनीता पंडा, अमेठी से प्रधानाचार्या श्रीमती अर्चना कृष्ण पाण्डेय, रायपुर छत्तीसगढ़ से डॉ० मुक्ता कौशिक आदि उपस्थित रहे.

स्नेहांगन कला केन्द्र

शाखाएंः मुण्डेरा, नैनी, प्रीतमनगर, प्रयागराज, जौनपुर, देवरिया, गोरखपुर, उ.प्र. में संचालित

कम्प्यूटर (डेस्क टॉप, प्रकाशन कार्य, टैली, डोयक ओ लेवल, सीसीसी, टाईपिंग (हिन्दी-अंग्रेजी), इग्लिश स्पोकेन, सिलाई, कढ़ाई, पेंन्टिग, ट्वायज मेकिंग, आईस क्रिम मेकिंग, इत्यादि।

सम्पर्क करेंः psdiit@rediffmail.com

राजा हो रंक, सबकी पसंद

राजरानी®

चाय

वाह क्या चाय हैं,

वाह क्या स्वाद है

देवनागरी लिपि समर्थ है भाषाओं को जोड़ने के लिए : प्रो शर्मा

भाषा एवं लिपि के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख का सारस्वत सम्मान

देश की प्रतिष्ठित संस्था राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा देवनागरी लिपि : वैशिष्ट्य और संभावनाएं पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया. जिसमें देश-दुनिया के अनेक विद्वान वक्ताओं और साहित्यकारों ने भाग लिया. कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार एवं अनुवादक श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नार्वे थे. मुख्य वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कुलानुशासक प्रो शैलेंद्र कुमार शर्मा थे. संगोष्ठी में भाषा एवं लिपि के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वरिष्ठ शिक्षाविद डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे का सारस्वत सम्मान किया गया. संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती सुवर्णा जाधव, मुंबई, वरिष्ठ पत्रकार डा० शंभू पवार-झुंझुनू, श्री हरेराम वाजपेयी-इंदौर, महासचिव डा० प्रभु चौधरी एवं उपस्थित वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए. कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष शिक्षाविद् श्री ब्रजकिशोर शर्मा, उज्जैन ने की.

श्री सुरेश चंद्र शुक्ल शरद आलोक ने कहा कि वर्तमान दौर में देवनागरी से जुड़े आत्म गौरव के भाव को जगाने की आवश्यकता है. देवनागरी के प्रयोग को राष्ट्रप्रेम का माध्यम बनाने के लिए सभी लोग प्रयत्नशील हों.

प्रो० शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि देश दुनिया की समस्त भाषाओं के मध्य गहरी एकता विद्यमान है. इस एकता को और अधिक मजबूती देने के लिए देवनागरी लिपि महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है. देश दुनिया की भाषाओं को लिपिबद्ध करने और उन्हें परस्पर जोड़ने के लिए देवनागरी लिपि सर्वाधिक समर्थ है. लिपिविहीन लोक और जनजातीय भाषाओं को जीवंत रखने के लिए देवनागरी लिपि का सशक्त आधार मिले, यह आवश्यक है.

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मो० शेख ने कहा कि यदि भाषा शरीर है तो लिपि उस भाषा की आत्मा होती है. देवनागरी लिपि एक समन्वित लिपि है. भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में निर्दिष्ट 22 भाषाओं में से संस्कृत, हिंदी, मराठी, कोंकणी, मैथिली, संथाली, बोडो, डोगरी, सिंधी, नेपाली आदि 10 भाषाओं की लिपि देवनागरी का प्रयोग किया जाता है.

अध्यक्षीय वक्ता के रूप में आदरणीय ब्रजकिशोर शर्मा जी ने डा. शहाबुद्दीन शेख को बधाई देते हुए कहा कि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है. आपने कहा कि वे एक अच्छे इंसान तो है ही, पर शिक्षा के माध्यम से आपने राष्ट्र की अप्रतिम सेवा की है. श्री शर्मा ने कहा कि देवनागरी लिपि निरंतर विकासशील रही है सारी लिपियों के मध्य देवनागरी में अनेक विशेषताएं हैं.

कार्यक्रम में डा० शहाबुद्दीन शेख के जन्म दिवस पर उपस्थित जनों ने उन्हें बधाई दी. अतिथि श्री राकेश छोकर-नई दिल्ली, डा० भरत शेणकर, डा० रोहिणी डाबरे-अहमदनगर, शिवा लोहारिया-जयपुर, श्री हरेराम वाजपेयी, डा. सुषमा कोंडे आदि ने डा. शेख के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला. अतिथि परिचय महासचिव डॉ० प्रभु चौधरी ने दिया.

सरस्वती वंदना डा. प्रवीण बाला-पटियाला ने तथा स्वागत गीत डा. रश्मि चौबे -गाजियाबाद एवं बधाई गीत डा. मुक्ता कौशिक-रायपुर ने प्रस्तुत किया. स्वागत भाषण डा. रोहिणी डाबरे अहमदनगर ने दिया. कार्यक्रम की प्रस्तावना डा. आशीष नायक, रायपुर ने प्रस्तुत की. अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, डा. पूर्णिमा कौशिक, डा.राकेश छोकर, डी० पी० शर्मा, डा० संगीता पाल, डॉ० सुषमा कोंडे, डॉ० ममता झा, डा० शिवा लोहारिया, श्री पंढरीनाथ शेल्के, श्री मुदस्सिर सैयद, ललिता घोड़के, डा० मनीषा सिंह, प्रगति बैरागी, मथेसूल जयश्री अर्जुन, जागृति पटेल, मस्तान शाह, प्रवीण बाला, पटियाला, वंदना तिवारी, डा. अशोक गायकवाड, श्री अफजल शेख, श्री दत्तात्रेय टिलेकर, डा. शोभा राणे, डा. श्वेता पंड्या, डा. पोपटराव आवटे, डा. रीता माहेश्वरी, घनश्याम राठौर, नजमा शेख, जिया खान, असीम आरा शेख, डा. अनुराधा अच्छवान, डा. मुक्ता यादव, जागृति पाटील, वंदना तिवारी, अलीम शेख आदि सहित अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का संचालन डा. रोहिणी डाबरे एवं डा. भरत शेणकर ने किया. आभार प्रदर्शन डा. लता जोशी ने किया.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

प्रथम ऑन लाईन गोष्ठी का विषय :

हिन्दी लेखन के विविध आयाम

आयोजन की तिथि : 15 जनवरी 2021, समयः सायं 7 बजे

इसमें दो भाग है लेख और वाचन जूम-एप पर. कोई भी हिन्दी प्रेमी (देश-विदेश) का इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आप लेख/जूम एप अथवा दोनों में प्रतिभाग कर सकते है. वक्ताओं का चयन आयोजक मंडल करेगा. सर्वश्रेष्ठ लेख/वाचक को संस्थान अगले आयोजन में सम्मानित करेगा एवं मई 2021 तक सर्वाधिक बार सर्वश्रेष्ठ चयनित होने वाले प्रतिभागी को रजत जंयति आयोजन पर भी सम्मानित किया जाएगा एवं लेख 10.01.2021 तक प्राप्त हो जाने चाहिए. यह गोष्ठी प्रत्येक माह की 15 तारिख निर्बाध रूप से चलती रहेगी.

आयोजकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, छत्तीसगढ़ ईकाई

अपने आलेख संस्थान के ई-मेल आईडी hindiseva15@gmail.com, पर भेज सकते है एवं वाचन के लिए निम्नलिखित ह्वाटसएप नंबर 9335155949, कार्यक्रम संयोजक (डॉ० मुक्ता कौशिक) : 8433773355 पर आयोजन के तीन दिन पूर्व सम्पर्क कर सकते है। कृपया फोन पर वार्ता न करें।

रजत जयंति आयोजन

संस्थान जून 2021 में अपना 25 वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस अवसर पर दो दिवसीय वृहद आयोजन किया जाएगा.

प्रथम दिन

-संस्थान नवनिर्मित निज पुस्तकालय एवं वाचनालय का उदघाटन

-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों परिचय सत्र

-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों की काव्य, चित्रकला, काव्य अतांकक्षरी प्रतियोगिता, नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता

दूसरे दिन

-संस्थान के कुलगीत का लोकार्पण

-संस्थान की रजत जयंति स्मारिका का विमोचन

-संस्थान की वेबसाईट का लोकार्पण

-काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019–20

-सारस्वत सम्मान 2019–20

-श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान

-मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान

इस आयोजन में 25 प्रतिभाओं (साहित्य/समाज सेवा/कला/संस्कृति) को संस्थान की उपाधियों / सारस्वत सम्मानों से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी गण रजत जंयति स्मारिका के लिए सशुल्क शुभकामनाएं, अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार, विज्ञापन, चंदा के माध्यम से यथा सम्भव सहयोग प्रदान करें। संस्थान के पदाधिकारियों/सदस्यों के लिए सामूहिक आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान करेहिन्दी सांसदो एवं सदस्योंतथा एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जाएगा. अगर आप इस समारोह में प्रतिभाग करना चाहते हैं तो अपना पंजीकरण ई-मेल के माध्यम से पंजीकरण प्रपत्र प्राप्त कर ३० अप्रैल २०२१ तक करा सकते है। सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।